मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

हिन्दी दैनिक

उत्तरशक्ति

हर खबर निष्पक्षता के साथ

मुंबई
वर्षः 7 अंक 169
शुक्रवार, 03 जनवरी 2025
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshakti.co.in

कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और रहेगाः अमित शाह

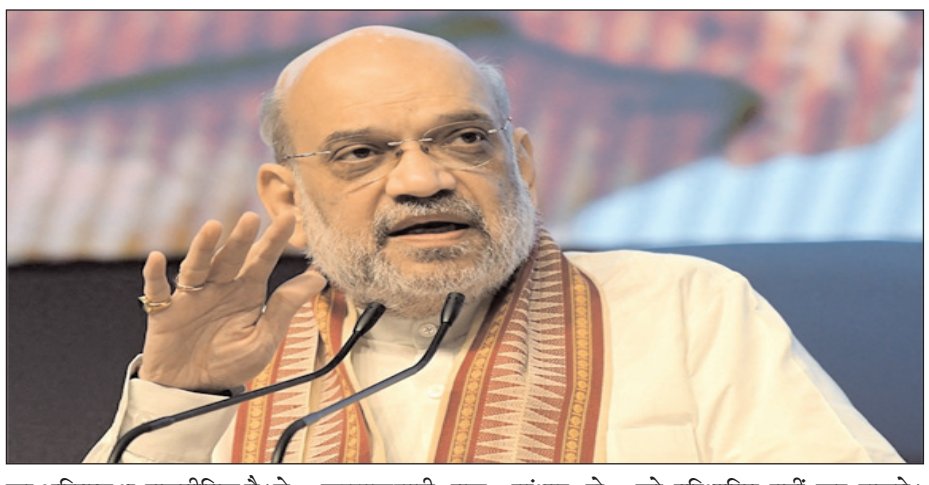

नई दिल्ली, 02 जनवरी। 'जम्मू-कश्मीर और लद्दाख थ्रू द एजेस' पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शामिल हुए। शाह ने इस दौरान कहा कि हमारे देश के हर कोने का इतिहास हजारों साल पुराना है, जहां दुनिया की सभ्यताओं को कुछ न कुछ देने के लिए काम किये गये। उन्होंने कहा कि परतंत्रता के समय हमें यह भूलाने का प्रयास किया गया। एक मिथक प्रचारित किया गया कि यह राष्ट्र कभी एकजुट नहीं था और स्वतंत्रता का विचार बेमानी था। बहुत से लोगों ने इस झूठ को स्वीकार भी किया।

शाह ने आगे कहा कि ब्रिटिश शासन के दौरान इतिहास में लिखी गई हमारे देश की परिभाषा उनकी जानकारी की कमी के कारण गलत थी। विश्व के सभी राष्ट्रों का अस्तित्व भू-राजनीतिक है। वे युद्ध या समझौते के परिणामस्वरूप सीमाओं द्वारा बनते हैं। उन्होंने दावा किया कि भारत दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जो 'भू-सांस्कृतिक' देश है और संस्कृति के कारण ही सीमाएँ निर्धारित होती हैं। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, गांधार से ओडिशा तक और बंगाल से असम तक, हम अपनी संस्कृति के कारण जुड़े हुए हैं।

उन्होंने साफ तौर पर कहा कि जो लोग किसी देश को किसी भू-राजनीतिक चीज के रूप में परिभाषित करते हैं, वे हमारे देश को परिभाषित नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि भारत को समझने के लिए हमारे देश को जोड़ने वाले तथ्यों को समझना होगा। कश्मीर और लद्दाख कहां थे, इस आधार पर तथ्यों को तोड़-मरोड़कर विश्लेषण करना कि इस पर किसने शासन किया, कौन रहते थे और कौन-कौन से समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, व्यर्थ है और केवल इतिहास की कुटिल दृष्टि वाले इतिहासकार ही ऐसा कर सकते हैं।

भाजपा नेता ने कहा कि भारत की सभी क्षेत्रों में फैली 10,000 साल पुरानी संस्कृति कश्मीर में भी मौजूद थी। जब 8000 साल पुरानी किताबों में कश्मीर और झेलम का जिक्र होता है तो कश्मीर किसका है, इस पर कोई टिप्पणी नहीं कर सकता। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा। इसे कोई भी कानून की धाराओं का इस्तेमाल कर अलग नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि कानून का उपयोग करके इसे अलग करने का प्रयास किया गया लेकिन समय के प्रवाह में वे धाराएँ निरस्त कर दी गईं और सभी बाधाएँ दूर हो गईं।

आरिफ मोहम्मद खान बने बिहार के नए गवर्नर

पटना, 02 जनवरी। आरिफ मोहम्मद खान ने गुरुवार को राजभवन में एक समारोह के दौरान बिहार के राज्यपाल के रूप में शपथ ली। पटना उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति के विनोद चंद्रन ने खान को पद की शपथ दिलाई। समारोह में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी के अलावा राज्य के अन्य मंत्री और गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। खान ने राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर का स्थान लिया, जिन्हें केरल का राज्यपाल नियुक्त किया गया है।

शपथ के बाद खान ने कहा कि मैंने अभी शपथ ली है। बिहार का गौरवशाली इतिहास है और बिहार के लोगों में बहुत क्षमता है - वे देश की पूरी व्यवस्था चला रहे हैं। वहीं, शपथ समारोह से पहले आरिफ मोहम्मद खान ने बांस घाट पर डॉ. राजेंद्र प्रसाद को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि ये वही लोग थे जिनके कारण देश को आजादी मिली। इसलिए इन्हें याद रखना जरूरी है। सोमवार को पटना पहुंचने के बाद खान ने हवाईअड्डे पर पत्रकारों से कहा था कि वह राज्य की गौरवशाली परंपरा के अनुरूप अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने का प्रयास करेंगे।

उन्होंने कहा कि मैं बिहार के गौरवशाली इतिहास को जानता हूं। इसका मुझ पर प्रभाव पड़ता है। मैं राज्य की विरासत और गौरवशाली परंपरा के अनुसार अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने का प्रयास करूंगा। आरिफ मोहम्मद खान ने बुधवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पैतृक गांव का दौरा किया और उनकी मां परमेश्वरी देवी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि दी।

उपदेश देने के बजाय प्रधानमंत्री मोदी को किसानों से बात करने के लिए कहे भाजपा: आतिशी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने बृहस्पतिवार को भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि उपदेश देने के बजाय पार्टी को प्रधानमंत्री से कहना चाहिए कि वह आमरण अनशन कर रहे किसानों से बात करें। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा लिखे गए पत्र का जवाब देते हुए आतिशी ने कहा कि भाजपा के शासनकाल में किसानों की जितनी दुर्दशा हुई, उतनी पहले कभी नहीं हुई। आतिशी ने अपने पत्र में लिखा, भाजपा का किसानों के बारे में बात करना दाऊद इब्राहिम द्वारा अहिंसा का उपदेश देने जैसा है। उन्होंने भाजपा से किसानों पर राजनीति नहीं करने के लिए कहा। चौहान ने बुधवार को आतिशी को लिखे पत्र में आरोप लगाया था कि आम आदमी पार्टी (आप) सरकार ने दिल्ली के किसानों की समस्याओं पर कोई ध्यान नहीं दिया। आतिशी ने कहा, पंजाब में किसान आमरण अनशन पर बैठे हैं। उन्होंने चौहान से आग्रह किया कि वह प्रधानमंत्री को किसानों से बात करने के लिए कहें। संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा के बैनर तले किसान 13 फरवरी से पंजाब और हरियाणा के बीच शंभू और खनौरी सीमा पर डेरा डाले हुए हैं। 13 फरवरी को सुरक्षा बलों ने उन्हें दिल्ली आने से रोक दिया था।

अन्ना विश्वविद्यालय में यौन उत्पीड़न का मामला, मद्रास हाईकोर्ट ने राजनीतिकरण करने के लिए पार्टियों को लगाई फटकार

चेन्नई। मद्रास उच्च न्यायालय ने राजनीतिक दलों द्वारा चल रहे अन्ना विश्वविद्यालय यौन उत्पीड़न मामले का राजनीतिकरण करने के प्रयास पर अस्वीकृति व्यक्त की है।

यह टिप्पणी पट्टाली मक्कल काची (पीएमके) नेता और वकील बालू द्वारा दायर एक याचिका की सुनवाई के दौरान आई, जिसमें मामले के संबंध में वल्लुवरकोटम में विरोध प्रदर्शन की अनुमति मांगी गई थी। विरोध प्रदर्शन आयोजित करने का प्रयास करते समय पुलिस द्वारा उनकी पार्टी के कई कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिए जाने के बाद बालू ने अदालत का दरवाजा खटखटाया। उन्होंने अदालत से हस्तक्षेप करने और पुलिस को प्रदर्शन की अनुमति देने का निर्देश देने का अनुरोध किया।

किसानों की चिंताओं पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र से किया सवाल

नई दिल्ली, 02 जनवरी। सुप्रीम कोर्ट ने किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल द्वारा दायर एक याचिका पर सुनवाई की, जिसका प्रतिनिधित्व गुनिंदर कौर गिल ने किया, जिसमें न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की निश्चित गारंटी की मांग सहित चल रहे किसान विरोध द्वारा उठाए गए व्यापक मुद्दों में अदालत के हस्तक्षेप की मांग की गई थी। आज की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने मौखिक रूप से पूछा कि केंद्र सरकार ने किसानों की वास्तविक शिकायतों को दूर करने की इच्छा क्यों नहीं जताई। जस्टिस सूर्यकांत और उज्जल भुइयां की बेंच ने मामले की सुनवाई की. केंद्र सरकार का प्रतिनिधित्व कर रहे सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने स्वीकार किया कि वह याचिका के विवरण से अनजान थे। हालाँकि, न्यायमूर्ति भुइयां ने मेहता से पूछा कि केंद्र सरकार ने किसानों की शिकायतों को सुनने और बातचीत में शामिल होने की इच्छा क्यों नहीं व्यक्त की मेहता ने बताया कि केंद्र सरकार ने याचिका में उठाए गए मुद्दों पर चर्चा के लिए पहले ही एक समिति गठित कर दी है। हालाँकि, न्यायमूर्ति भुइयां ने इसे चुनौती देते हुए सुझाव दिया कि सरकार को भी सार्वजनिक रूप से किसानों के साथ बातचीत के लिए अपने खुलेपन की घोषणा करनी चाहिए। जस्टिस भुइयां ने आगे सवाल किया केंद्र सरकार भी यह बयान क्यों नहीं दे सकती कि उनके दरवाजे किसानों के लिए खुले हैं? न्यायमूर्ति कांत ने याचिकाकर्ता गुनिन्दर कौर गिल को किसानों के साथ बातचीत के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित उच्चाधिकार प्राप्त समिति से संपर्क करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनसे टकराव के बजाय रचनात्मक जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया गया। न्यायमूर्ति कांत ने समिति की तटस्थता पर भी प्रकाश डाला, जिसमें सकारात्मक बातचीत के अवसर के रूप में पंजाब और हरियाणा के कृषि विशेषज्ञ शामिल हैं। न्यायमूर्ति कांत ने गिल से कहा कि कुछ सोचो। आइए हम टकराव के साथ न जाएं। मैडम गिल, आप एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। समिति पर विचार करें, जिसमें मजबूत कृषि जड़ों वाले एक पूर्व न्यायाधीश के साथ-साथ पंजाब और हरियाणा के विशेषज्ञ भी शामिल हैं। जैसे कि कृषि अर्थशास्त्री, ये तटस्थ, विद्वान व्यक्ति हैं जिनकी कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं है, टकराव के दृष्टिकोण के बजाय बातचीत के लिए इस मंच का उपयोग क्यों न करें?

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री ने मंत्रालय में सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की

मुंबई, 02 जनवरी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने बृहस्पतिवार को गृह विभाग और पुलिस बल के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ दक्षिण मुंबई स्थित राज्य सचिवालय मंत्रालय में सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा की।अधिकारियों ने बताया कि फडणवीस ने उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के साथ एक बैठक के दौरान मंत्रालय में सुरक्षा उपायों की समीक्षा की। उन्होंने बताया कि बैठक में महाराष्ट्र की मुख्य सचिव सुजाता सौनिक, अतिरिक्त मुख्य सचिव (गृह) आई. एस. चहल, पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) रश्मि शुक्ला, मुंबई पुलिस आयुक्त विवेक फनसालकर, विशेष पुलिस आयुक्त देवेन भारती और अन्य अधिकारी शामिल हुए। अधिकारियों ने बताया कि बैठक के दौरान सुरक्षा के अन्य पहलुओं पर भी चर्चा की गई।

कृषि कानूनों को पिछले दरवाजे से दोबारा लागू करने की तैयारी में केंद्र सरकारः अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली, 02 जनवरी। आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने गुरुवार को कहा कि अगर पंजाब में प्रदर्शनकारी किसानों को कुछ हुआ तो भाजपा जिम्मेदार होगी। आपको बता दें कि पंजाब के किसान एमएसपी पर कानूनी गारंटी समेत कई मांगों को लेकर अनिश्चितकालीन उपवास पर हैं। केजरीवाल ने एक्स पर लिखा कि पंजाब में किसान कई दिनों से धरने और अनिश्चित अनशन पर बैठे हैं। इनकी वही मांगे हैं जो केंद्र सरकार ने तीन साल पहले मान ली थी लेकिन अभी तक लागू नहीं की। केजरीवाल ने दावा किया कि बीजेपी सरकार अब अपने वादे से मुकर गई। बीजेपी सरकार किसानों से बात तक नहीं कर रही। उनसे बात तो करो। हमारे ही देश के किसान हैं। उन्होंने सवाल किया कि बीजेपी को इतना ज्यादा अहंकार क्यों है कि किसी से बात भी नहीं करते? उन्होंने साफ तौर पर कहा कि पंजाब में जो किसान अनिश्चित अनशन पर बैठे हैं, भगवान उन्हें सलामत रखें लेकिन यदि उन्हें कुछ होता है तो इसके लिए बीजेपी ज़िम्मेदार होगी।

आप प्रमुख ने कहा कि देशभर के किसानों की जानकारी के लिए मैं बता दूँ कि जो तीन काले कानून केंद्र ने तीन साल पहले किसानों के आंदोलन की वजह से वापिस लिए थे, उन्हें पालिसी कहकर केंद्र सरकार पिछले दरवाजे से दोबारा लागू करने की तैयारी कर रही है। इस पालिसी की कॉपी उनके विचार जानने के लिए केंद्र ने सभी राज्यों को भेजी है। वहीं, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने दिल्ली की आप सरकार पर किसानों के कल्याण की अनदेखी करने का आरोप लगाया। इसको लेकर उन्होंने मुख्यमंत्री आतिशी को पत्र भी लिखा है जिसमें मंत्री ने कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में लोग केंद्र द्वारा योजनाओं के कार्यान्वयन न होने से परेशान और चिंतित हैं। शिवराज ने पत्र में कहा कि मैं बहुत दुःख के साथ आपको यह पत्र लिख रहा हूँ। आपने कभी भी दिल्ली में किसानों के हित में उचित निर्णय नहीं लिए। केंद्र सरकार की किसान हितैषी योजनाओं को भी आपकी सरकार ने दिल्ली में लागू होने से रोक दिया है। भाजपा नेता ने आगे कहा कि आपकी सरकार को किसानों से कोई सहानुभूति नहीं है। आज दिल्ली के किसान परेशान और चिंतित हैं। केंद्र की कई किसान कल्याण योजनाओं को दिल्ली सरकार द्वारा लागू न करने के कारण किसान भाई-बहन इन योजनाओं के लाभ से वंचित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैंने पहले भी आपको पत्र लिखकर दिल्ली के किसानों की समस्याओं से अवगत कराया था, लेकिन चिंता की बात है कि आपकी सरकार ने इन समस्याओं का समाधान नहीं किया है।

मणिपुर में माफी कोरा दिखावा न होकर सार्थक बदलाव करें

-ललित गर्ग

मणिपुर में जातीय संघर्ष, व्यापक हिंसा एवं अराजक माहौल के लिए पूर्वोत्तर राज्य के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने बीते साल के आखिरी दिन शांति की दिशा में एक सराहनीय पहल करते हुए क्षमायाचना मांगी है, इस माफी को लेकर राजनीति के गलियारों में व्यापक चर्चा है। क्योंकि इस हिंसा में मई 2023 से 250 से अधिक लोगों की जान चली गई और हजारों लोग बेघर हो गए है। लम्बे समय से यह प्रांत अस्थिरता, असंतोष एवं अशांति की आग में जल रहा है। एन बीरेन सिंह ने माफी मांगते हुए हिंसा के इस लंबे कालखण्ड एवं सिलसिले को दुर्भाग्यपूर्ण बताया और सभी समुदायों से अपील की कि पिछली गलतियों को भुलाकर वे शांति और सौहार्द कायम करें। हालांकि मुख्यमंत्री की इस अपील के अपने मतलब निकाले जा रहे है। कुछ लोगों का कहना है कि यह माफी बहुत पहले मांगी जानी चाहिए थी। कुछ का यह मानना है कि माफी ऐसे समय आई है जब मुख्यमंत्री चौतरफा दबाव में है। विरोधी तो बहुत पहले से उनका इस्तीफा मांग रहे हैं, पिछले कुछ समय से खुद उनके विधायकों और सहयोगियों ने इस माफी को उनकी मजबूरी का परिणाम बताया है। निश्चित ही बीरेन सिंह के लिये माफी मांगना काफी नहीं है, अगर वह मानते हैं कि स्थिति को संभालने में नाकाम रहे तो उन्हें पद से इस्तीफा दे देना चाहिए था या केन्द्र को राष्ट्रपति शासन लगाना चाहिए था। अफसोसनाक यह है कि इस मसले पर अक्सर विवाद उभरते रहे और राजनीतिक शख्सियतों के बीच आरोप-प्रत्यारोप अक्सर बेलगाम बोल में तब्दील हो होते रहे, कोई ठोस समाधान सामने नहीं आया, जो गैरजिम्मेदाराना राजनीति को दशार्ता है।

मणिपुर में 3 मई 2023 से ही बहुसंख्यक मैतेई और कुकी के बीच आरक्षण और आर्थिक लाभ को लेकर जो हिंसा शुरू हुई वह अभी थमने का नाम नहीं ले रही। कभी अपनी सांस्कृतिक सद्भावना के लिए जाना जाने वाला राज्य अब गहराते विभाजन एवं जातीय संघर्ष का सामना कर रहा है और लोग लगातार भय में जी रहे हैं। तनाव कम होने का कोई संकेत नहीं दिख रहा। शांति एवं सद्भावना की तलाश अभी भी जारी है। मणिपु? में जब चंद दरिंदें दो महिलाओं को निर्वस्त्र कर उनके साथ बर्बरतापूर्ण हरकत करते नजर आए तो पूरा प्रांत आक्रोश में आ गया। जनमानस की प्रतिक्रिया लोकतांत्रिक व्यवस्था में बहुत महत्व रखती है। न तो राज्य सरकार ने और न ही केन्द्र सरकार ने हिंसा को रोकने के लिए कोई ठोस उपाय किए और न ही शांति स्थापित करने के कोई प्रयास किए गए। मुख्यमंत्री एन. बीरेन सरकार डेढ़ साल से ज्यादा समय से खेमों में बंटती राजनीतिक उलझन में फंसी रही। सभी दल, नेता एवं सरकार नामुमकिन निशानों की ओर कौमों को दौड़ती रही। यह कौमों के साथ नाइंसाफी होने के साथ अमानवीयता की चरम पराकाष्ठा थी। क्योंकि ऐसी दौड़ जहां पहुंचाती है, वहां कामयाबी की मंजिल नहीं, बल्कि मायूसी का गहरा गड्ढा होता है।

मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह स्वीकारोक्ति कि ह्यह्यमैं राज्य में जो कुछ हुआ उसके लिए खेद व्यक्त करना चाहता हूं। कई लोगों ने अपनों को खो दिया और कई लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ा। मैं खेद व्यक्त करता हूं और माफी मांगता हूं। लेकिन पिछले तीन-चार महीनों में अपेक्षाकृत शांति देखने के बाद, मुझे उम्मीद है कि आने वाले साल में स्थिति सामान्य हो जाएगी ह्लह्ल प्रश्न है कि मुख्यमंत्री 18 माह के खून-खराबे के बाद अब क्यों माफी मांग रहे हैं? वे क्या संदेश देना चाहते हैं? अगर वह स्थिति को संभालने में नाकाम रहे थे तो उन्हें बहुत पहले इस्तीफा दे देना चाहिए था। ताकि स्थितियों लगातार इतनी विकराल नहीं होती, इतनी अधिक जनहानि नहीं होती। देश के नेताओं को गाल बजाने की बजाय आम आदमी को परेशान करने वाली सामाजिक असुरक्षा, जातीय संघर्ष तथा हिंसा जैसे मुद्दों से निबटने के लिये दूरगामी नीतियों के क्रियान्वयन के प्रयास करने चाहिए। यूं तो मणिपुर हिंसा में इतने मासूमों की मौत के बाद मुख्यमंत्री के माफी मांगने का कोई औचित्य नजर नहीं आ रहा। इसीलिये विपक्ष दल एवं कांग्रेस उन पर और केन्द्र सरकार पर हमलावर है। 19 महीनों में एन.बीरेन असंवेदनशील बने रहे और वर्ष के अंत में उन्होंने माफी मांगकर किस संवेदनशीलता का परिचय दिया है? अब सवाल यह है कि त्रासदी का अंत कैसे हो? कैसे शांति स्थापित हो? जरूरत है मनुष्य को बांटे नहीं, सत्य को ढंके नहीं।

बड़ा सवाल यह है कि राज्य द्वारा माफी मांगना केवल दिखावा है और राजनीतिक अपयश निवारण और क्षतिपूर्ति की आवश्यकता मात्र है या किसी सार्थक बदलाव की बुनियाद। हालांकि इस तरह की राजनीतिक माफी अक्सर संदेहास्पद ही होती है क्योंकि माफी में इससे कहीं अधिक की क्षमता होती है। सार्वजनिक रूप से माफी मांगने वाले नेताओं की संख्या में वृद्धि विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं चिन्तनीय रही है। माफी मांगना एक ऐसी युक्ति है जिसका इस्तेमाल नेता अब अक्सर अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिये करते हैं, ताकि वे कम से कम लागत पर अपनी गलतियों को पीछे छोड़ सकें या उनसे पीछा छूडा सके। लेकिन बीरेन सिंह की माफी की अच्छी बात यह है कि तमाम दबावों के बाद ही सही, राजनीति और समाज के हर प्रमुख हिस्से ने उनकी माफी को सकारात्मक कदम माना है। ऐसे में जरूरी हो जाता है कि इस माफी की पहल को विश्वसनीय बनाया जाये एवं ऐसे उपयोगी एवं जरूरी कदम उठाए जाये ताकि मणिपुर राज्य में मैतेई समुदाय और पहाड़ी क्षेत्रों में कुकी जनजातीय समुदायों के बीच चला आ रहा टकराव विराम पा जाये। जरूरी है कि केंद्र और राज्य की सरकार मुख्यमंत्री की इस पहल से उपजे सद्भाव को स्थायित्व देने की कोशिशें अविलंब शुरू कर दें।

2023 के मुकाबले 2024 की दूसरी छमाही में मणिपुर के हालात बेहतर रहे, संघर्ष की स्थितियां कम देखने को मिली। लेकिन पूर्व की हिंसक घटनाओं और मृतकों की संख्या को उससे बनने वाले माहौल से अलग करके नहीं देखा जा सकता। तनाव, संघर्ष और अविश्वास के जिस माहौल से मणिपुर गुजर रहा है, उसकी सचाई इसी हफ्ते कांगपोकपी जिले में कथित कम्युनिटी बंकरों को सुरक्षा बलों द्वारा नष्ट किए जाने पर हुए संघर्ष में 40 लोगों के जख्मी होने और कुकी नैशनल फ्रंट के कथित हमलों के खिलाफ चुराचांदपुर जिले में बंद का आह्वान किए जाने से स्पष्ट है। अभी भी असामान्य हालातों के बीच सवाल है कि मुख्यमंत्री की इस माफी का राज्य के अलग-अलग समुदायों के लोगों पर कैसा और कितना असर पड़ेगा? सवाल महत्वपूर्ण इसलिए भी हो जाता है क्योकि यह आरोप संघर्ष शुरू होने के बाद से ही लगता रहा है कि मुख्यमंत्री और राज्य प्रशासन की भूमिका निरपेक्ष नहीं है। आरोप पूरी तरह गलत हो तो भी इससे इतना तो स्पष्ट है कि प्रदेश के लोगों का एक खेमा उन्हें अविश्वास भरी नजरों से देखता है। इतने गंभीर और मानवता के अस्तित्व को ही नकारने से जुड़े मसले पर भी समाज के लोगों में जो बंटवारे की प्रवृत्ति राजनीतिक कारणों से दिख रही है वो किसी भी नजरिए से देश की एकता और अखण्डता के लिये फायदेमंद नहीं है।

मुद्दा चाहे कोई भी, खांचों या खेमों में बांटने या बंटने का और आम लोगों को तोड़ने का या जोड़ने का- राजनीति से जुड़े लोगों, राजनीतिक दलों और नेताओं में तो शुरू से रहा है लेकिन जब समाज में आम लोग भी इस तरह के बंटवारे का हिस्सा बन जाते हैं तो इसमें नुकसान सिर्फ और सिर्फ देश के नागरिकों का होता है। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन. बीरेन सरकार संकट में सही ढंग से नहीं निपटने के चलते अपनी विश्वसनीयता पहले ही खो चुकी है, लेकिन उसे पुनः हासिल करने के लिये माफी से आगे बढ़कर और अधिक सामाजिक एकता, समरसता एवं सौहार्द के प्रयत्न करने होंगे। हमारे देश की राजनीति की विडम्बना ही रही है कि लोगों को धर्म, जाति, वर्ग, भाषा, वर्ण के नाम पर बांट कर किसी न किसी तरह सत्ता हासिल करना। हालांकि सही मायने में लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीति की परिभाषा और दायरा उससे कहीं ज्यादा व्यापक है। जातीय हिंसा का समाधान संवाद से ही होता है। राज्य सरकार को अपनी जिम्मेदारी समझते हुए मैतेई और कुकी समुदाय के साथ लगातार संवाद जारी रखना चाहिए।

दिल्ली चुनाव में भाजपा व आप की सीधी लड़ाई में मायावती का हाथी किसका खेल बिगाड़ेगा ?

अशोक भाटिया

70 सदस्यीय दिल्ली विधानसभा के चुनाव में 2015 से राजधानी की सत्ता पर काबिज सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी के बीच सीधा मुकाबला होने की संभावना है।पर 2024 के आगामी विधानसभा चुनाव में बहुजन समाज पार्टी आप और भाजपा की मुश्किलें बढ़ाने की तैयारी में है। बहुजन समाज पार्टी की ओर से सभी 70 सीटों पर चुनाव लड़ने की संभावना है। इसको लेकर प्रत्याशियों के चयन की प्रक्रिया भी शुरू हो चुकी है। उम्मीदवारों की पहली सूची जनवरी के मध्य तक जारी होने की संभावना है। पार्टी की ओर से कहा गया है कि फरवरी में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव दिलचस्प और चुनौतीपूर्ण दोनों हैं।

इस समय दिल्ली चुनाव में सबकी नजर अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व वाली आम आदमी पार्टी पर है। आंदोलन से निकली इस पार्टी ने अपने पहले ही चुनाव में कमाल किया था। फिर 2015 के चुनाव में दिल्ली की 70 में से 67 सीटें जीतकर इतिहास रच दिया था। 2020 में भी दिल्ली की 63 सीटों पर पार्टी ने कब्जा जमाया। वहीं, पंजाब में भी पार्टी सत्ता में है। हालांकि, पार्टी के लिए 2024 का साल अच्छा नहीं रहा। कानूनी परेशानियों, नेतृत्व परिवर्तन और चुनावी असफलताओं से जूझते हुए आम आदमी पार्टी को 2024 में अशांति का सामना करना पड़ा।

फरवरी में दिल्ली विधानसभा चुनाव की तैयारी के साथ, पार्टी अपनी नीतियों में जनता के विश्वास को फिर से बनाने और अपने शासन रिकॉर्ड और विवादों से आकार लेने वाले राजनीतिक परिदृश्य को नेविगेट करने के लिए दृढ़ संकल्पित है। 2024 में आप के लिए सबसे बड़ा झटका उसके सुप्रीमो और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की मार्च में प्रवर्तन निदेशालय द्वारा उत्पाद शुल्क नीति मामले से जुड़े कथित भ्रष्टाचार को लेकर गिरफ्तारी थी। यह पहली बार था कि किसी मौजूदा मुख्यमंत्री को गिरफ्तार किया गया था।

मई में सुप्रीम कोर्ट द्वारा अंतरिम जमानत दिए जाने से पहले केजरीवाल ने लगभग छह महीने तिहाड़ जेल में बिताए। जबकि अदालत ने उन्हें लोकसभा चुनावों के लिए प्रचार करने की अनुमति दी, लेकिन उन्हें आधिकारिक कर्तव्यों को फिर से शुरू करने से रोक दिया, एक ऐसा निर्णय जिसने राष्ट्रीय राजधानी में नियमित शासन को प्रभावित किया। केजरीवाल की गिरफ्तारी के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ नेताओं को कानूनी परेशानियों का सामना करना पड़ा, जिससे आप की छवि पर काफी असर पड़ा। हालाँकि, 2024 वह साल भी था जब सभी शीर्ष गिरफ्तार नेताओं को जमानत दे दी गई थी।

आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह को अप्रैल में जमानत मिल गई, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, जिन्हें 2023 में गिरफ्तार किया गया था, 17 महीने जेल में रहने के बाद अगस्त में रिहा हो गए और एक अन्य प्रमुख नेता सत्येन्द्र जैन को अक्टूबर में जमानत मिल गई। इन कानूनी राहतों के बावजूद, मामलों ने आप की भ्रष्टाचार विरोधी कहानी को नुकसान पहुँचाया, विपक्षी दलों ने पार्टी की विश्वसनीयता पर सवाल उठाने के लिए विवादों का इस्तेमाल किया।

2024 के लोकसभा चुनावों में, आप दिल्ली की सात सीटों में से किसी को भी सुरक्षित करने में विफल रही, बावजूद इसके कि उसका वोट शेयर 2019 में 18.2 प्रतिशत से बढ़कर 2024 में 24.14 प्रतिशत हो गया। इसके अलावा, पार्टी पंजाब में जिन 13 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ी थी, उनमें से केवल तीन सीटें जीतने में सफल रही, जिससे उसकी आकांक्षाओं को झटका लगा। नतीजों ने मतदाताओं के असंतोष को रेखांकित किया और विपक्षी आख्यानों का प्रभावी ढंग से मुकाबला करने की पार्टी की क्षमता पर सवाल उठाए।

ऐसे में भाजपा जिसने 2024 के लोकसभा चुनावों में दिल्ली की सातों सीट जीती थी अब इस चुनाव में आप पार्टी को विधानसभा में शिकस्त देने की तैयारी कर रही है । चुनाव के इस रण में अचानक बसपा ने सभी सीटों पर लड़ने का एलान कर भाजपा व आप पार्टी के लिए मुसीबत कड़ी कर दी है । वैसे मायावती के हाथी का इस रण में उतरना कोई नई बात नहीं है । राजधानी दिल्ली में बसपा दिल्ली नगर निगम की 250 और दिल्ली विधानसभा की 70 सीटों पर चुनाव लड़ती हुई आई है। साल 2008 में दिल्ली में 2 उम्मीदवार बसपा से जीत कर पहुंचे थे। हालांकि, 2013 के विधानसभा चुनाव में पार्टी किसी भी सीट से चुनाव नहीं जीती। हालांकि, इन सबके बाद बसपा ने साल 2009, 2014 और 2019 में दिल्ली में लोकसभा चुनाव भी लड़ा था, लेकिन कोई खास कामयाबी नहीं मिली। दिल्ली की राजनीति में बसपा ने चुनाव हर बार लड़ा, लेकिन दम नहीं दिखा पाई। वर्ष 2004 से 2024 तक हुए चार लोकसभा चुनाव में बसपा को इस बार सबसे कम वोट प्रतिशत मिला है। इस बार उसका वोट शेयर महज 0.71 प्रतिशत रहा, जबकि वर्ष 2019 में 1.1 फीसदी रहा था। राजधानी दिल्ली में बसपा की छवि अब सिर्फ वोट काटने वाली पार्टी की बन गई है।

ज्ञात हो कि लोकसभा चुनाव में बिना गठबंधन में शामिल हुए अकेले मैदान में उतरी बसपा ने दिल्ली में सभी सीटों पर प्रत्याशी उतारे थे। जातीय समीकरणों को साधने की भी पूरी कोशिश की, लेकिन राजनीतिक कमाल दिखाना तो दूर, बसपा के प्रत्याशी जमानत जब्त होने से भी नहीं बचा सके। 2009 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने दिल्ली में अपने राजनीतिक सफर में सबसे ज्यादा 5.23 फीसदी वोट पाए थे। भाजपा और कांग्रेस की तुलना में यह भले कम था, लेकिन बसपा के कई प्रत्याशियों ने चुनाव मैदान में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई थी। इसके बाद 2014 में मोदी लहर में एससी वोट भाजपा की तरफ खिसका तो दिल्ली में बसपा के हाथ करीब-करीब खाली हो गए। इस चुनाव में बसपा को दिल्ली में सिर्फ 1.23 फीसदी वोट शेयर मिला था। इसके बाद से हर चुनाव में बसपा के लिए न तो राजनीतिक और न ही जातीय समीकरण काम आए। मुस्लिम और एससी बहुल क्षेत्रों में सजातीय प्रत्याशियों को टिकट देने के बावजूद बसपा के लिए जीत का स्वाद चखना तो दूर, 2009 जैसी स्थिति को वापस पाना भी मुश्किल हो गया। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव के दौरान दिल्ली में बसपा की स्थिति 2014 जैसी भी नहीं रही। 0.1 फीसदी वोट शेयर और नीचे खिसक कर बसपा का वोट प्रतिशत इस चुनाव में महज 1.1 फीसदी रह गया था। 2024 के लोकसभा चुनाव में बसपा ने फिर से दिल्ली की सभी सीटों पर प्रत्याशी उतारे। आम आदमी पार्टी से बगावत करके आए मंत्री राजकुमार आनंद को टिकट देकर राजनीतिक समीकरण साधने का प्रयास किया, लेकिन बसपा का प्रदर्शन लोकसभा चुनाव में अब तक का सबसे खराब प्रदर्शन रहा। चुनाव दर चुनाव नीचे गिर रहे बसपा के वोट शेयर के आंकड़े बता रहे हैं कि बसपा का वजूद दिल्ली में अब सिर्फ वोट काटने वाली पार्टी का बनकर रह गया है। जीत हासिल करना पार्टी के लिए बेहद मुश्किल हो गया है।दिल्ली में बसपा का प्रदर्शन 2009 के लोकसभा चुनाव में बढ़िया रहा था। इस चुनाव में पार्टी को सबसे ज्यादा 12.04 फीसदी वोट दक्षिणी दिल्ली सीट पर मिले थे। बसपा ने यहां कंवर सिंह तंवर को टिकट देकर चुनाव मैदान में उतारा था। मजबूत प्रत्याशी और जातीय समीकरणों को साधकर उन्होंने अन्य प्रत्याशियों से ज्यादा वोट पाए थे, लेकिन जीत हासिल नहीं कर पाए थे।1989 से 2024 तक के चुनाव में बसपा को दिल्ली में मिला वोट शेयर बहुत ही कमजोर रहा ।

मायावती को सोचना चाहिए कि दो सत्ताधारी दिग्गज पार्टियों की लड़ाई में वह कहाँ टिकेगी । केवल दो पाटों के बीच पिस कर रह जाएगी । लोकतंत्र में चुनाव लड़ने का हक सबकों है पर सामने वालों की ताकत को भी देखना चाहिए । दिल्ली में एक दशक से अरविंद केजरीवाल की अगुवाई वाली आम आदमी पार्टी सत्ता में है। आगे भी कुर्सी पर बने रहने के लिए केजरीवाल की ओर से महिलाओं, बुजुर्गों पर फोकस करके योजनाओं का ऐलान किया जा रहा है। दिल्ली में फ्रीबीज को लेकर आप सरकार लगातार विपक्ष के निशाने पर रही है लेकिन केजरीवाल को यह फॉर्मूला काफी रास आया है। यही वजह है कि पार्टी ने 70 विधानसभा सीटों वाली दिल्ली में दो बार 60 से ज्यादा सीटें हासिल की हैं।

हाल में लगे भ्रष्टाचार के आरोपों के बाद अरविंद केजरीवाल को जेल भी जाना पड़ा। यही नहीं, मनीष सिसोदिया, सत्येंद्र जैन, संजय सिंह जैसे टॉप पार्टी लीडर भी जेल में रह चुके हैं। केजरीवाल ने जमानत पर बाहर आकर उट पद से इस्तीफा दिया और चुनाव में जाने से पहले आतिशी को दिल्ली का सीएम नियुक्त किया। लेकिन वह पहले ही साफ कर चुके हैं कि दिल्ली का चुनाव उनके ही नेतृत्व में लड़ा जाएगा। साथ ही सत्ता में वापसी होने पर मुख्यमंत्री भी केजरीवाल ही बनेंगे।केजरीवाल की पार्टी की ओर से भी एक नया नारा दिया गया है, 'नहीं बिगड़ने देंगे दिल्ली का हाल, फिर लाएंगे केजरीवाल'। आम आदमी पार्टी लगातार भाजपा पर आरोप लगाती रही है कि अगर केजरीवाल सत्ता से गए तो भाजपा फिर बिजली-पानी के दाम बढ़ा देगी, सब कुछ महंगा कर देगी। पार्टी जनता के सामने भी इन्हीं सब मुद्दों को लेकर जाती है और पार्टी का दावा है कि अगर भाजपा सत्ता में आती है तो दिल्लीवालों को फ्री में मिलने वाली सभी सुविधाएं बंद कर दी जाएंगी। पार्टी का ये नारा भी इसी संदेश को जाहिर करता दिख रहा है।

उधर, भाजपा सीधे तौर पर केजरीवाल और आप पर भ्रष्टाचार समेत झूठे वादे करने का आरोप लगा रही है। साथ ही भाजपा का आरोप है कि केजरीवाल पुराने वादों को पूरा करे बगैर चुनाव से पहले जनता से नए वादे कर रहे हैं जो कभी पूरे होने वाले नहीं हैं। केंद्र में 10 साल से सरकार होने के बाद भी दिल्ली में भाजपा अब तक कमाल नहीं कर सकी है, हालांकि लोकसभा की सातों सीटों पर पार्टी काबिज है। लेकिन दिल्ली में भाजपा पिछले तीन दशक से मुख्यमंत्री की कुर्सी पाने के लिए लड़ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली विधानसभा चुनाव का बिगुल शुक्रवार को फूंक रहे है । रोहिणी के जापानी पार्क में पीएम रैली को संबोधित करेंगे और दिल्ली के विकास की कार्ययोजना पेश करते हुए 4500 करोड़ रुपये की कई परियोजनाओं की सौगात देंगे। वहीं, प्रधानमंत्री की दूसरी रैली पांच जनवरी को पूर्वी दिल्ली के सीबीडी ग्राउंड में प्रस्तावित है। इस मौके पर प्रधानमंत्री दिल्ली मेट्रो के फेज-4 के तहत रिठाला-नरेला-कुंडली लाइन का शिलान्यास और दिल्ली-सहारनपुर नेशनल हाईवे के शुभारंभ के साथ ही दिल्ली को जाम व प्रदूषण मुक्त करने के लिए चार मुख्य प्रोजेक्टों से अवगत कराएंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 3 जनवरी को पूर्वी और पश्चिमी दिल्ली में दो नए दिल्ली विश्वविद्यालय परिसरों के साथ-साथ वीर सावरकर के नाम पर एक कॉलेज की आधारशिला रख सकते हैं, विश्वविद्यालय के सूत्रों ने यह जानकारी दी। यह कॉलेज नजफगढ़ में सावरकर कॉलेज 140 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से बनाया जाएगा। इसे 2021 में डीयू की कार्यकारी परिषद ने मंजूरी दी थी। ऐसे में चुनाव में मायावती कोई खास दम नहीं दिखा पाएगी । शायद इसी कारण उस पर वोट कटवा का टेग लग चुका है।

अपनों के निशाने पर कांग्रेस पार्टी

-रमेश सर्राफ धमोरा

-रमेश सर्राफ धमोरा

कांग्रेस पार्टी इन दिनों अपने ही साथी दलों के निशाने पर है। भाजपा के खिलाफ विपक्षी दलों के संयुक्त इंडिया गठबंधन में शामिल विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं द्वारा कांग्रेस पार्टी से इंडिया गठबंधन का नेतृत्व वापस लेने की मांग की जा रही है। इंडिया गठबंधन में शामिल बंगाल की मुख्यमंत्री व तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो ममता बनर्जी खुले आम कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व पर सवाल उठा रही है। उनकी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने प्रेस कांफ्रेंस करके कांग्रेस पार्टी को इंडिया गठबंधन के नेता पद से हटाने की मांग की हैं। ममता बनर्जी की मांग के समर्थन में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री व राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने भी अपनी सहमति जताई है। इससे इंडिया गठबंधन की स्थिति लगातार कमजोर हो रही है।

जून 2023 में 26 विपक्षी दलों के साथ बना इंडिया गठबंधन अब टूट के कगार पर खड़ा है। लोकसभा चुनाव में मिली हार और उसके बाद हरियाणा व महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में हुई पराजय ने इस गठबंधन को कमजोर कर दिया है। इसी के चलते कांग्रेस के सहयोगी दल ही उसकी नेतृत्व क्षमता पर सवाल उठाकर अलग राह पकड़ने के संकेत दे रहे हैं। हाल ही में दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी ने तो कांग्रेस को इंडिया गठबंधन से बाहर निकलवाने तक की धमकी दे दी है। कांग्रेस द्वारा दिल्ली विधानसभा चुनाव अकेले लड़ने की घोषणा के बाद से ही आम आदमी पार्टी कांग्रेस से खासी नाराज नजर आ रही है। पार्टी नेताओं का कहना है कि कांग्रेस जिस तरह से चुनाव लड़ रही है उससे भाजपा को लाभ मिल रहा है। कांग्रेस नेता अजय माकन व संदीप दीक्षित के बयान विपक्ष को कमजोर करने के लिए भाजपा के कहने पर दिए जा रहे हैं। समाजवादी पार्टी, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद चंद पवार), नेशनल कांफ्रेंस तो खुलकर कांग्रेस की मुखालफत करने लगी है।

हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस अपनी जीत तय मानकर आम आदमी पार्टी से गठबंधन करने से इनकार कर दिया था। जिसके चलते आम आदमी पार्टी ने कई सीटों पर अकेले ही चुनाव लड़कर 1.8 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे। जबकि हरियाणा में कांग्रेस को 39.34 प्रतिशत वोट व भाजपा को 39.94 प्रतिशत वोट मिले थे। यदि हरियाणा में कांग्रेस आम आदमी पार्टी से समझौता करके चुनाव लड़ती तो निश्चय ही सरकार बन सकती थी। मगर कांग्रेस ने अवसर गवां दिया और वहां भाजपा ने आसानी से तीसरी बार पहले से भी अधिक बहुमत से सरकार बना ली। उत्तर प्रदेश विधानसभा के उपचुनाव में तो समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस के लिए एक भी सीट नहीं छोड़ी थी। जबकि लोकसभा चुनाव कांग्रेस और समाजवादी पार्टी ने मिलकर ही लड़ा था। महाराष्ट्र में कांग्रेस नीत महा विकास अघाड़ी की करारी हार होने के बाद शिवसेना (यूबीटी) ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधते हुए कहा था कि कांग्रेस ने हरियाणा में आप और समाजवादी पार्टी को सीट ना देकर गलती की थी। पार्टी के मुखपत्र सामना में भी लिखा गया कि कांग्रेस नेताओं के अति आत्मविश्वास और घमंड ने हरियाणा में हार के लिए भूमिका निभाई। पार्टी नेता संजय राउत ने तो यहां तक कह दिया कि कांग्रेस को लगने लगा था कि वह अकेले ही जीत सकती है। इसलिए किसी को भी सत्ता में भागीदार बनाना उचित नहीं समझा था। पिछले लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 99 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। कांग्रेस कुल 329 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। जिसमें से 145 सीटों पर बिना किसी गठबंधन की अकेले चुनाव लड़ी थी। जिसमें कांग्रेस 37 सीटों पर चुनाव जीती थी। कांग्रेस का बिना किसी दल से गठबंधन में जीत का रेशियो 25.52 प्रतिशत रहा था। जबकि कांग्रेस 184 सीटों पर साथी दलों से गठबंधन करके चुनाव लड़ी थी। इसमें कांग्रेस ने 62 सीट जीती थी और जीत का रेशियो 33.75 प्रतिशत रहा था। इस तरह से देखे तो कांग्रेस पार्टी को अकेले चुनाव लड़ने की बजाय गठबंधन साथियों की बदौलत बड़ी जीत हासिल हुई थी। लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को 13 करोड़ 67 लाख 59 हजार 64 यानी 21.29 प्रतिशत वोट मिले थे। गठबंधन करने के कारण 2019 की तुलना में 2024 में कांग्रेस को 1.91 प्रतिशत अधिक वोट मिले थे। कांग्रेस पार्टी ने पंजाब, चंडीगढ़, छत्तीसगढ़, गोवा, कर्नाटक, लक्षद्वीप, मणिपुर, मेघालय, नागालैंड, उड़ीसा, तेलंगाना व पश्चिम बंगाल में अपने बूते चुनाव लड़ा था। जबकि बिहार, गुजरात हरियाणा झारखंड, केरल, महाराष्ट्र, पांडिचेरी, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश में गठबंधन करके चुनाव लड़ा था। अंडमान निकोबार दीप समूह, आंध्र प्रदेश, दादरा नगर हवेली व दमन दीव, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, लद्दाख, मध्य प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तराखंड ऐसे प्रदेश है जहां लोकसभा चुनाव में कांग्रेस का खाता भी नहीं खुल सका था। हरियाणा विधानसभा चुनाव में हार के बाद कांग्रेस को सबसे बड़ा झटका महाराष्ट्र में लगा जहां उनकी सीटे 44 से घटकर 16 रह गई। महाराष्ट्र में कांग्रेस शिवसेना (यूबीटी) व राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरदचंद्र पवार) के साथ महाविकास अघाड़ी बनाकर चुनाव मैदान में उतरी थी। वहां कांग्रेस सबसे अधिक 101 सीटों पर चुनाव लड़ी जिसमें महज 16 सीट ही जीत पाई। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 80 लाख 20 हजार 921 वोट मिले जो कुल मतदान का 12. 42 प्रतिशत थे। महाराष्ट्र में कांग्रेस की जीत का स्ट्राइक रेट 15.38 प्रतिशत ही रहा। संसद का शीतकालीन सत्र का समापन हो चुका है। जिसमें अधिकांश समय कांग्रेस ने अदानी मुद्दे को लेकर संसद नहीं चलने दी। इससे संसद का कार्य पूरी तरह प्रभावित रहा। इसको लेकर भी कांग्रेस की सहयोगी तृणमूल कांग्रेस, सपा ने कांग्रेस को घेरते हुये आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर बहस नहीं होने देना चाहती है तथा सिर्फ अदानी मुद्दे को ही जिंदा रखे हुए हैं। यदि संसद चलती तो कई तरह के मुद्दों पर सरकार को घेरा जा सकता था। इंडिया अलायंस में जिस तरह की खटपट वर्तमान समय में चलने लगी है वह अलायंस के लिए शुभ नहीं मानी जा सकती है। अलायंस में शामिल दल ही विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस के नेतृत्व को नकारने लगे है इससे बुरी बात कांग्रेस पार्टी के लिए और क्या हो सकती है। लोकसभा चुनाव में जिस तरह से विपक्षी पार्टियों ने एकजुट होकर इंडिया गठबंधन बनाकर केंद्र में सत्तारूढ़ भाजपा को कड़ी टक्कर दी थी। वही गठबंधन अब धीरे-धीरे कमजोर पड़ता जा रहा है। आने वाले समय में दिल्ली विधानसभा के चुनाव होने हैं। वहां भाजपा चुनाव जीतने की पूरी रणनीति बनाने में जुटी हुई है। आम आदमी पार्टी चाहती है कि वह दिल्ली की सत्ता पर फिर से काबिज हो। मगर कांग्रेस का रवैया देखकर आम आदमी पार्टी भी सकते में है। पार्टी के नेता कांग्रेस को वोट कटवा के रूप में देख रहे हैं तथा खुले आम भाजपा की बी टीम के रूप में काम करने का आरोप लगा रहे हैं। कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों की दो सूची जारी कर दी है। शेष सीटों पर भी जल्दी ही प्रत्याशियों के नाम घोषित करने की तैयारी चल रही है। यदि दिल्ली चुनाव में आम आदमी पार्टी पराजित हो जाती है तो इंडिया गठबंधन के ताबूत में वह आखरी कील साबित होगी। कांग्रेस को यदि इंडिया गठबंधन को बचाना है तो अपने सहयोगी क्षेत्रीय दलों की भावनाओं को समझ कर फैसला करना होगा। तभी कांग्रेस अपने राजनीतिक वजूद को बचा पाएगी। इंडिया गठबंधन टूटने की स्थिति में कांग्रेस का भी कमजोर होना तय माना जा रहा है। क्योंकि कांग्रेस अकेले भाजपा से मुकाबला नहीं कर सकती है। गठबंधन के साथी दलों की मदद से ही कांग्रेस मजबूत हो सकेगी इस बात से कांग्रेस नेता भी अच्छे से वाकिफ है।

पास/फेल की बजाय समग्र विकास/जीवन कौशल की नीतियां बनाएं

-प्रियंका सौरभ

कक्षा 5 और 8 में छात्रों के लिए नो-डिटेंशन पॉलिसी को खत्म करना भारत की शिक्षा प्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण बदलाव है। शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत शुरू की गई इस नीति का उद्देश्य छात्रों की असफलता को रोककर शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना था। हालाँकि, सीखने के परिणामों में गिरावट की चिंताओं के साथ, संशोधन अकादमिक सुधार पर जोर देकर पहुँच और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बीच संतुलन बनाने का प्रयास करता है। नो-डिटेंशन पॉलिसी को खत्म करने से यह सुनिश्चित होता है कि छात्र शिक्षा प्राप्त करना जारी रखें, भले ही वे अकादमिक रूप से संघर्ष करते हों, जिससे सार्वभौमिक पहुँच के सिद्धांत को बल मिलता है। जिन छात्रों को असफलता के कारण निष्कासित कर दिया जाता था, उन्हें अब परीक्षा फिर से देने और सुधारात्मक सहायता प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

असफल छात्रों को रोककर, नीति सक्रिय भागीदारी और जवाबदेही को प्रोत्साहित करती है, जबकि अभी भी शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच को प्राथमिकता देती है। कक्षा 5 में असफल होने वाले छात्रों को अब अगली कक्षा में जाने से पहले सुधार करने का मौका मिलता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे पीछे न छूट जाएँ। नीति में सुधारात्मक निर्देश के प्रावधान शामिल हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी छात्र शैक्षणिक संघर्ष के कारण शिक्षा से वंचित न रहे, न्यायसंगत पहुँच को बढ़ावा दिया जाता है। उदाहरण के लिए: कक्षा 5 में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्रों को विशेष सहायता और पुनः परीक्षा के अवसर मिलते हैं, जिससे उन्हें शिक्षा प्रणाली में बने रहने में मदद मिलती है। माता-पिता संघर्षरत छात्रों की पहचान करने और प्रगति की निगरानी करने में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी बच्चों को, चाहे उनका प्रदर्शन कैसा भी हो, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त हो।

माता-पिता शिक्षकों के साथ नियमित संचार के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि शैक्षणिक विफलता के कारण कोई भी बच्चा अनदेखा न हो। नीति का उद्देश्य छात्रों को सफल होने के कई अवसर देकर उन्हें शिक्षा प्रणाली में बने रहने के लिए प्रोत्साहित करके उन्हें स्कूल छोड़ने से रोकना है। नीति परिवर्तन के बाद, कक्षा 8 में अनुत्तीर्ण होने वाले छात्रों को परीक्षा में बैठने का एक और मौका दिया जाता है, जिससे स्कूल छोड़ने की दर कम हो जाती है। नीति परिवर्तन स्कूलों को उन छात्रों की पहचान करने के लिए प्रेरित करता है जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है, सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए अधिक अनुकूलित दृष्टिकोण पर जोर देता है। केंद्रीय विद्यालयों में, संघर्षरत छात्रों को अब सीखने के अंतराल को दूर करने के लिए अतिरिक्त कोचिंग प्रदान की जाती है, जिससे बेहतर शैक्षणिक प्रदर्शन सुनिश्चित होता है। पुनः परीक्षा प्रणाली रटने के बजाय योग्यता-आधारित परीक्षणों पर ध्यान केंद्रित करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि छात्रों के सीखने के परिणाम अधिक सार्थक और प्रभावशाली हों। सैनिक स्कूलों में, हाल ही में लागू की गई योग्यता-आधारित परीक्षाएँ व्यावहारिक ज्ञान का आकलन करती हैं, जिससे छात्र तथ्यों को याद करने के बजाय मूल अवधारणाओं को समझने में सक्षम होते हैं। नीति यह सुनिश्चित करके समग्र विकास को बढ़ावा देती है कि असफल छात्रों को शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक दोनों आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत ध्यान मिले। दिल्ली सरकार के स्कूलों में, संघर्षरत छात्रों को समग्र विकास को बढ़ावा देने के लिए शैक्षणिक सुधार के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समर्थन भी मिलता है। शिक्षक अब सीखने के अंतराल की पहचान करने और उसे दूर करने के लिए ज़िम्मेदार हैं, यह सुनिश्चित करते हुए कि वे प्रत्येक छात्र की प्रगति में अधिक निवेश करें। कक्षा शिक्षक अब प्रगति रिकॉर्ड बनाए रखते हैं और विषयों में संघर्ष करने वाले छात्रों की व्यक्तिगत रूप से निगरानी करते हैं, जिससे लक्षित हस्तक्षेप रणनीतियाँ बनती हैं। पास होने के लिए कई मौके देकर, नीति विफलता के कलंक को कम करती है, छात्रों को लगे रहने और सुधार करने के लिए प्रेरित करती है। जो छात्र पहले असफल हुए थे, वे कलंक के जोखिम में थे, लेकिन अब उन्हें दूसरा मौका दिया गया है, जिससे ड्रॉपआउट दर कम हुई है और दृढ़ता की सुविधा मिली है। नो-डिटेंशन पॉलिसी को खत्म करने से बेहतर सीखने के परिणामों के साथ सार्वभौमिक पहुँच का संतुलन बना रहता है। जवाबदेही और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर देकर, यह शिक्षण और मूल्यांकन में सुधार ला सकता है। हालाँकि, इस बदलाव को सफल बनाने के लिए शिक्षकों के बेहतर प्रशिक्षण, सुधारात्मक सहायता और छात्रों के आधारभूत कौशल को मजबूत करने के लिए बेहतर बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है। देश में शिक्षा की निम्न गुणवत्ता के मूल कारणों को संबोधित करने के बजाय, पूरा ध्यान पास/फेल प्रणाली को फिर से लागू करने पर है। समय की मांग है कि सभी पक्षों को अधिक गंभीरता से काम करना चाहिए, और अब समय आ गया है कि शेष मुद्दों को संबोधित करने के लिए प्रयास किए जाएं। परिणामस्वरूप, नीति में नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए उपयुक्त समायोजन के साथ संशोधन किया जाना चाहिए, या इसे एक नए, अधिक संतुलित दृष्टिकोण से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। मुख्य लक्ष्य बच्चों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करना और उन्हें जीवन कौशल प्रदान करना होना चाहिए।

नो डिटेंशन पॉलिसी के तहत कक्षा 1 से 8 तक के किसी भी छात्र को फेल नहीं किया जा सकता था। हालांकि अब इन छात्रों को फेल किया जा सकेगा। साथ ही फेल छात्रों को 2 महीने के भीतर फिर से परीक्षा का अवसर मिलेगा। अगर इसमें भी फेल होते हैं तो उन्हें अगली कक्षा में प्रोन्नत नहीं किया जाएगा। शिक्षा के अधिकार अधिनियम की नो-डिटेंशन पॉलिसी के अनुसार, किसी भी छात्र को तब तक फेल या स्कूल से निकाला नहीं जा सकता, जब तक वह कक्षा 1 से 8 तक की प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं कर लेता। लेवल 8 तक के सभी विद्यार्थियों को स्वचालित रूप से अगली कक्षा में पदोन्नत कर दिया जाएगा। नीति का मुख्य बिंदु यह है कि कक्षा 8 तक, पारंपरिक अर्थों में कोई ₹परीक्षा₹ नहीं होती है। समय की मांग है कि सभी पक्षों को अधिक गंभीरता से काम करना चाहिए, और अब समय आ गया है कि शेष मुद्दों को संबोधित करने के लिए प्रयास किए जाएं।

बोईसर-पालघर पत्रकार संघ की बैठक संपन्न

पालघर(उत्तरशक्ति)। पत्रकारिता के साथ ही साथ सामाजिक कार्यों के लिए प्रसिद्ध पत्रकारों का संगठन बोईसर-पालघर पत्रकार संघ (रजि.) के अध्यक्ष रामप्रकाश निराला की अध्यक्षता में पालघर जिले के बोईसर शहर अंतर्गत चित्रालय स्थित सरोवर होटल में बैठक आयोजित की गई। संघ की इस बैठक में आगामी सोमवार 6 जनवरी 2025 को मराठी पत्रकारिता के जनक आचार्य बालशास्त्री जाम्भेकर की जयंती मानने की तैयारी को लेकर चर्चा की गई। इस दौरान पत्रकार संघ के उपस्थित सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने लोकल ट्रेन से गिरकर घायल छात्रा की जान बचाने वाले एनसीसी कैडेट पवन जयसवाल को सत्कारमूर्ति बनाने पर सहमति जताते हुए उन्हें विशेष जीवन रक्षक पुरस्कार से सम्मानित करने का निर्णय सर्वसम्मति से लिया गया। बोईसर पालघर पत्रकार संघ (रजि.) की बैठक में अध्यक्ष रामप्रकाश निराला, कार्याध्यक्ष जयप्रकाश पाटील, उपाध्यक्ष प्रवीण पाटील, महासचिव मोहन म्हात्रे, सचिव नीलेश नगरकर, सह सचिव दीपक निराला व अजीत सिंह, कार्यकारी सदस्य मृत्युंजय पाण्डेय, संगीता शाह आदि मौजूद रहे।

श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह का भांडुप में आयोजन

मुंबई (उत्तरशक्ति)। श्री राधेकृष्ण संस्थान द्वारा तुलशेत पाड़ा, भांडुप प. पर श्रीमद भागवत कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन गुलाबधर दुबे की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर परम श्रध्येय शिवम् शुक्ला द्वारा संगीत मय भागवत कथा का प्रवचन एवं निरुपण किया गया। इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. बाबूलाल सिंह, पारसनाथ तिवारी, आर डी यादव, डॉ. सचिन सिंह, डॉ. आर.एम. पाल, रनंजय सिंह, अविनाश पाण्डेय (पत्रकार), अरुण सिंह,तपेन्द्र सिंह सहित कई गणमान्य लोगों का सम्मान अंगवस्त्रम प्रदान कर कथावा चक पं. शिवम्-शुक्ला द्वारा किया गया। सप्ताह के आयोजन में सुरेंद्र तिवारी, विनोद कुमार दुबे, सदाशिव चतुर्वेदी, डी एन मिश्रा, मंगला प्रसाद मिश्रा, कन्हैया लाल शर्मा, प्रदीप पाठक का विशेष योगदान, सहयोग प्राप्त हुआ। इस अवसर पर भांडुप की जनता का भारी जमावडा देखने व सुनने हेतु उमड़ पड़ा। रोजाना भगवान कृष्ण की लीलाओं की मनोरम झाँकिया विशेष आकर्षण का केंद्र रहीं।

क्रिकेटर विनोद कांबली को मिली अस्पताल से छुट्टी

मुंबई। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व स्टार खिलाड़ी विनोद कांबली, जो बीते कुछ दिनों से गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे थे, अब पूरी तरह स्वस्थ हो चुके हैं। नए साल के पहले दिन उन्हें भिवंडी के आकृति अस्पताल से छुट्टी मिल गई है।अस्पताल में १० दिन तक चले इलाज के बाद अब वे अपने पैरों पर खड़े होकर घर लौटने के लिए तैयार हैं। गौरतलब हो कि मुंबई में एक कार्यक्रम के दौरान कांबली की बिगड़ती हालत चर्चा का विषय बन गई थी। उनकी मदद के लिए भिवंडी के आकृति अस्पताल के संचालक शैलेश ठाकूर खुद आगे आए। उन्होंने विनोद कांबली को उनके बांद्रा स्थित घर से भिवंडी लाकर अस्पताल में भर्ती कराया। अस्पताल ने न केवल उनके इलाज का पूरा खर्च उठाया बल्कि उन्हें दोबारा स्वस्थ करने के लिए विशेष ध्यान भी दिया। आकृति अस्पताल के डॉक्टरों और नर्सों ने कांबली को दोबारा मजबूत और आत्मनिर्भर बनाने के लिए दिन-रात मेहनत की। इसी का नतीजा है कि अब कांबली फिर से अपने पैरों पर खड़े होकर घर लौटने के लिए तैयार हैं। अस्पताल में इलाज के दौरान, उन्होंने भारतीय क्रिकेट टीम की जर्सी पहनकर बैट हाथ में लिया और क्रिकेट खेलने का आनंद भी उठाया।कांबली डिस्चार्ज के समय कांबली ने अपने फैंस और डॉक्टरों का धन्यवाद करते हुए कहा, ₹सभी के प्यार और डॉक्टरों की मेहनत से मैं ठीक हो पाया। मेरा क्रिकेट करियर खत्म नहीं हुआ है। मैं जल्द ही शिवाजी पार्क जाकर फिर से क्रिकेट खेलूंगा। क्रिकेट मेरा जीवन है, और इसे कभी नहीं छोड़ूंगा।

सोनाटा पेश करते हैं नया स्लीक कलेक्शन

मुंबई/पटना। भारत के अग्रणी वॉच ब्राण्ड सोनाटा ने अपनी आइकोनिक स्लीक सीरीज के छठे संस्करण -स्लीक कलेक्शन का अनावरण किया। यह नया लॉन्च भव्यता और इनोवेशन को नया आयाम देने की सोनाटा की प्रतिबद्धता को दशार्ता है, इसके साथ कंपनी अपने इतिहास में सबसे स्लिम मैन्स वॉचकेस लेकर आई है। बोल्ड नई पहचान और सोच-समझ कर बनाई गई रेंज के साथ यह कलेक्शन आज के युवा प्रोफेशनल्स की पसंद को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। अरबन एवं सब-अरबन प्रोफेशनल्स के लिए पेश किया गया स्लीक कलेक्शन सदाबहार डिजाइन के साथ आधुनिकता का बेहतरीन संयोजन है।

उद्योग जगत की रिपोर्ट के अनुसार भारतीयों में मध्यम कीमत वाली घड़ियों की मांग तेजी से बढ़ रही हैं, जो स्टाइल के साथ-साथ पैसा वसूल भी हों। सोनाटा का नया स्लीक कलेक्शन इसी मांग को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है जो किफायती दाम में शिक लुक देता है।

सद्कर्म करते समय व्यक्ति को भगवान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिएः प्रेमभूषण महाराज

नालासोपारा(उत्तरशक्ति)। नालासोपारा पूर्व में आओ गायें रामकथा घर घर में..इस आध्यत्मिक आंदोलन के प्रणेता मानस के सिद्ध साधक,व्यवहार घाट के ओजस्वी प्रवक्ता पूज्यश्री प्रेमभूषण महाराज अपने भजनों और भावभंगिमा के द्वारा कथा गायन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हैं। अतः कथा का प्रारंभ ही उन्होंने अपने सुप्रसिद्ध भजन मानस के अनुसार कल्याण की पहली शर्त श्रद्धा हैकी पहली शर्त है। सद्कर्म करते समय व्यक्ति को भगवान के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहिए इस बात का स्मरण रखना चाहिए कि जीव का सारा सद्कर्म स्वयं के लिए होता है, भगवान के लिए कुछ भी नही होता। हमें अपने जीवन की सभी उपलब्धियों को भगवान की कृपा प्रसादी मानकर जीवन जीना चाहिए।पूज्यश्री ने भगवान के प्राकट्य महोत्सव प्रसंग पर ..आया साँवला सरकार हँसते हँसते., बधइया बाजे आँगने.. में और बाललीला पर अपना प्यारा भजन अंगनिया

में रघुवर खेला करें.. सुनाया कथा में उमड़ा जनसैलाब मंत्रमुग्ध होकर झूमने,थिरकने लगा।पचपन से बचपन का मेल बड़ा ही सुखदायी होता है।बच्चों से स्नेह करने वाला सौभाग्यशाली होता है, पूज्यश्री ने जनमानस को सजग करते हुए कहा कि बच्चों के साथ प्रेम पूर्वक न खेलने वाला अंत मे कुत्तों के ही साथ खेलता है।अपने बच्चों की निंदा गैरों से कदापि न किया जाए, बच्चों की निंदा स्वयं की निंदा होती है। पूज्यश्री ने कहा कि,भरोसा भगवान का प्रत्येक कार्य की सिद्धि का मूल मंत्र है। ये सारी बातें पूज्यश्री ने नालासोपारा (पूर्व)में बिजेंद्र रामचंद्र सिंह के संयोजन में चल रही श्रीरामकथा में कही। मानस महाकुंभ में उमड़े श्रद्धालुओं के बीच सुप्रसिद्ध उद्योगपति, समाज सेवक ज्ञानप्रकाश सिंह और उनके पुत्र युवा समाजसेवक अमित सिंह भी अतिथि के रूप में कथा में उपस्थित रहकर कथा की मुख्य यजमान श्रीमती मीरा बिजेंद्र सिंह, श्रीमती श्रद्धा प्रिंस सिंह,कुमारी शिवानी सिंह, महादेव सिंह, बजरंग सिंह,मुम्बई प्रधान गणेश अग्रवाल,प्रभात सिंह बब्लू,सतीश सिंह,राजेश पाण्डे,अशोक सिंह आशावादी,अवनीश सिंह, कुँवर संजय सिंह, वरिष्ठ पत्रकार लालशेखर सिंह,सुधाकर सिंह विसेन' सनी सिंह, विशाल सिंह ननवग,त्रिभुवन पांडे,श्रीमती अशोका तिवारी,निशा शर्मा, विजय पाण्डे एवं प्रेमभूषण महाराज के मीडिया प्रभारी दिनेशप्रताप सिंह ने भी अवगाहन करते हुए अपना सौभाग्यवर्धन किया।

'2026 तक नहीं टिक पाएगी मोदी सरकार, महाराष्ट्र में भी होगा असर', संजय राउत ने कर दिया बड़ा दावा

मुंबई। शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मौजूदा कार्यकाल के पूरा होने से पहले संभावित व्यवधान की भविष्यवाणी करते हुए केंद्र सरकार की स्थिरता पर संदेह जताया है। पत्रकारों से बात करते हुए, राउत ने अनुमान लगाया कि सरकार 2026 से आगे नहीं टिक पाएगी। उन्होंने कहा कि मेरे मन में संदेह है कि केंद्र सरकार 2026 के बाद भी जीवित रहेगी। मुझे लगता है कि मोदी अपना कार्यकाल पूरा नहीं करेंगे, और अगर केंद्र सरकार अस्थिर हो गई, तो इसका असर महाराष्ट्र पर भी पड़ेगा।महाराष्ट्र और देश भर में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों के बीच, केंद्र में अस्थिरता की स्थिति में राज्य की भविष्य की राजनीतिक गतिशीलता पर बहस छिड़ गई है। इसके साथ ही राउत ने उन अटकलों को भी खारिज कर दिया कि नवंबर 2024 के महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों में पार्टी के खराब प्रदर्शन के बाद शिवसेना (उबाठा) के कुछ नेता पार्टी छोड़ सकते हैं। उन्होंने राजापुर के पूर्व विधायक राजन साल्वी के उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी छोड़ने की अटकलों के जवाब में यह बात कही।

पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) ने 543 सदस्यीय सदन में 293 सीटें जीती थीं, जिससे प्रधानमंत्री मोदी के लिए लगातार तीसरी बार सत्ता में आने का रास्ता साफ हुआ था। हालांकि, भाजपा अकेले बहुमत हासिल करने से काफी दूर रह गई और सहयोगी दलों पर निर्भर रहना पड़ा।

पांच लोगों के खिलाफ बिजली चोरी का मामला दर्ज

भिवंडी। शांतीनगर पुलिस ने पांच व्यक्तियों के खिलाफ अवैध रूप से बिजली चोरी करने का मामला दर्ज किया है। आरोपियों ने अपनी आर्थिक लाभ के लिए बिजली मीटर से छेड़छाड़ कर अवैध कनेक्शन के जरिए बिजली का उपयोग किया और ७७,१८२ रुपये मूल्य की बिजली चोरी की। यह मामला भिवंडी क्षेत्र में सामने आया।

शिकायतकर्ता टोरेंट पॉवर कंपनी के एक्जीक्यूटिव अधिकारी हितेश अशोक कुनार सुतार, ने पुलिस को जानकारी दी कि नागांव,सागर प्लाजा होटल के पास जाकीर शेख, छोटे लाल बघेल व विशाल अपने दुकान में बिजली का अनधिकृत उपयोग कर रहे है।

पुलिस ने इस मामले में बिजली उपभोक्ता जाकीर शेख, छोटे लाल बघेल व विशाल के खिलाफ केस दर्ज किया है। आरोप है कि आरोपी ने बिजली कनेक्शन के इनकमिंग टर्मिनल में अवैध रेंजिंग केबल जोड़कर बिना अनुमति बिजली का उपयोग किया। इसके जरिए आरोपी ने टोरेंट पॉवर कंपनी को लगभग ४८,६०६ लाख रुपये से अधिक का नुकसान पहुंचाया। इसी तरह शांतिनगर में भी शादाब अंसारी और शाहनवाज ने मीटर के इनकमिंग टर्मिनल में अवैध कनेक्शन कर २८,५७६ रुपए की बिजली चोरी की। शांतिनगर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ भारतीय विद्युत अधिनियम २००३ की धारा १३५ के तहत मामला दर्ज कर लिया है। शिकायत दर्ज होने के बाद पुलिस ने घटनास्थल की जांच की और सबूत जुटाए।

केसीएन क्लब द्वारा निःशुल्क चिकित्सा शिविर एवं सम्मान समारोह आयोजित

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के वसई शहर अंतर्गत ओम नगर इस्कॉन हाइट कोऑपरेटिव सोसायटी में स्थित अमित रोड़लाइन्स व बैलेंस यूओर शोल एक्सक्लुसिव योगा क्लासेस के हॉल में बुधवार 1 जनवरी 2025 को निःशुल्क चिकित्सा शिविर व सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

नोइंग सिटीजन्स नीड् क्लब की द्वारा नववर्ष पर्व सेवा के उद्देश्य राष्ट्रीय मार्गदर्शक व पूर्व यूजीसी ज्वाइंट सेक्रेटरी डॉ कपिलदेव प्रसाद मिश्र के जन्मदिन पर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत अध्यक्षता कर रहे महाराष्ट्र कमेटी के वरिष्ठ पदाधिकारी राम आश्रय यादव व मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पूर्व यूजीसी ज्वाइंट सेक्रेटरी व डॉ कपिलदेव प्रसाद मिश्र, विशिष्ट अतिथि वसई मानिकपुर पुलिस

स्टेशन पर नियुक्त सहायक पुलिस निरीक्षक रमेश शंकर डायगुडे, वरिष्ठ सम्पादक साहित्यकार डॉ कृपाशंकर मिश्र, केसीएन क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष नंदन मिश्र त्यागी, निर्झरिणी संयोजक भोलानाथ तिवारी मूर्धन्य भरतांचली , इस्कॉन के सचिपुत्र गौर दास के द्वारा फीता काटकर नारियल तोड़कर व माता सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर व पुष्प अर्पित कर की गई। कार्यक्रम का संचालन महर्षी दयानन्द कॉलेज परेल के हिंदी विभागाध्यक्ष व उप प्राचार्य डॉ उमेश चन्द्र शुक्ल ने किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ समाजसेवी राम सरीखे यादव ने किया। कार्यक्रम के अंत में सभी का आभार एडवोकेट के आर तिवारी ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में डॉ कपिलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा केक काटकर आरती पूजन कर जन्मदिन उत्सव मनाया गया।

कार्यक्रम में योग के क्षेत्र में राष्ट्रीय ख्याति अर्जित लक्ष्मी यादव, अमित यादव, डेन्टल सर्जन डॉ. स्वाति यादव, फिजियथेरिपिस्ट डॉ. प्रीति यादव हास्य योग मित्र मंडल वसई के सचिव ब्रम्हपाल सिंह, वरिष्ठ साहित्यकार व काव्यसृजन के संस्थापक अध्यक्ष शिवप्रकाश जमद्नपुरी, रमेश पाठक, अरविंद दुबे, राकेश अग्रवाल, प्रदीप साल्कर, अशोक कुमार सिंह, चन्द्र प्रकाश तिवारी, रजनीश श्रीवास्तव , तीरथराज यादव, जैनेश सिंह, राम सनेही ओझा, अप्पा शिंदे, जैन साहब, दिनेश मोदी, रामकृष्ण शबद मेडिकल टीम में भीमराव घरत, राजेंद्र संखे, डॉ सूर्यवंशी , रविन्द्र वझे, जयेश पाटील, रश्मि संखे, जान्हवी पाटील, महेंद्र सरोज आदि मेडिकल जांच टीम सहित पुलिसकर्मी, अतिथिगण पदाधिकारी, पत्रकारगण व अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

माहिम मखदूम शाह बाबा के 611 वें उर्स मुबारक में पेश की गई चादर शरीफ

मुंबई(उत्तरशक्ति)। मुंबई के माहिम में इन दिनों मखदूम शाह बाबा का 611 वां उर्स मुबारक चल रहा है। यहां उर्स के दौरान हजारों श्रद्धालु अपनी मन्नतें लेकर आते हैं और अपनी मुरादें पाते हैं। दरगाह शरीफ में उर्स की पहेली चादर मुंबई पुलिस की तरफ से परंपरागत चढ़ाई जाती है और मुंबई पुलिस द्वारा सलामी दी जाती है। उर्स के दौरान माहीम में मेला भी लगाया जाता है। मखदूम शाह बाबा दरगाह में मुंबई के अलावा कई शहरों से श्रद्धालुओं द्वारा चादर शरीफ भी चढ़ाई जाती है। इस मौके पर माहीम हाजी अली दरगाह के ट्रस्टी सोहैल खंडवानी के साथ दैनिक मुंबई हलचल के

संपादक व अखिल भारतीय पत्रकार सुरक्षा समिति के महाराष्ट्र अध्यक्ष और पत्रकार संघ वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिलशाद एस खान, फ्लोरियन फाउंडेशन के संस्थापक अर्चना जैन, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के संस्थापक डा अजय एल दुबे, जावेद पारिख,एंकर सिमरन आहूजा, पवन चौधरी, शाइस्ता अंसारी, कल्पेश मेहता, शेखर मोदी, सनम पठान, पुनित भाई, पूजा वर्मा, रिजवान बैग, समेत कई लोग मौजूद रहे और माहीम मखदुम शाह बाबा दरगाह में चादर शरीफ पेश करने के साथ दुआएं मांगी गई।

भांडुप में बड़े ही धूमधाम से मनाया गया आर डी यादव का जन्मदिवस

मुंबई (उत्तरशक्ति)। भांडुप में उत्तर भारतीय समाज सहित सभी समाजों के हित के लिए कार्य करने वाले भाजपा झोपड़पट्टी मोर्चा के महाराष्ट्र अध्यक्ष आर डी यादव का 1 जनवरी को बड़े ही धूमधाम से जन्म दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोगों ने केक काटकर व पुष्पगुच्छ जैसे अन्य भेट देकर जन्मदिवस मनाया।

आपको बता दें रामदौर यादव के शुभचिंतकों द्वारा आयोजित जन्मदिवस भांडुप पश्चिम, लिंक रोड, डी मार्ट के ऑपोजिट स्थित उनके कार्यालय के सामने मनाया गया। जहाँ बड़ी संख्या में हर वर्ग जे लोगों ने पहुँच कर उन्हें बधाई दी। इस अवसर ईशान्य मुंबई बीजेपी अध्यक्ष दीपक दलवी,कांग्रेस के मंगला शुक्ला, बीजेपी उभामो उपाध्यक्ष

विजय सिंह,के आर सिंह,दयाशंकर सिंह,गुलाब दुबे, मनीष तिवारी ,अविनाश पांडेय, कवि सदाशिव चतुर्वेदी, मनोज सिंह, आरके मिश्रा, राजेश गुप्ता, सहित बड़ी संख्या में लोग जन्मदिवस की शुभकामनाएं देने के लिए पहुंचें। आर डी यादव ने मीडिया से कहा यह लोगों का प्यार है। उन्होंने इस तरह का भव्य आयोजन हमारे जन्मदिवस पर किया मैं उन सब मित्रों का शुक्रगुजार हूं। मैं कोशिश करूंगा की इसी तरह अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक उनके दुख-सुख में सदा खड़ा रहूं और हर संभव मदद के लिए आगे बढ़ कर कार्य करता रहूंगा। हमनें चाहे भाजपा पार्टी हो या हमारा समाज सबके लिए सदैव तटस्थ होकर जमीनी स्तर पर कार्य किया है आगे भी करता रहूंगा।

विक्रोली में अल रेहमान इंग्लिश हाई स्कूल का वार्षिकोत्सव संपन्न

मुंबई (उत्तरशक्ति)। मुंबई के विक्रोली में अल रेहमान इंग्लिश हाई स्कूल की तरफ से १२ वें वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया.।इस अवसर पर दसवीं कक्षा में उत्कृष्ट क्रमांक पाने वाले छात्रों को शिवसेना के सांसद संजय दीना पाटिल, राजूल संजय पाटिल, अल रेहमान इंग्लिश हाई स्कूल के चेयरमैन अब्दुल रेहमान अंसारी, मुंबई उत्तर के शिक्षा अधिकारी मुश्ताक शेख, पूर्व नगरसेवक धनंजय दादा पिसाल

व अन्य अतिथियों के हाथों से पुरस्कार दिए गए।

इस अवसर पर युवा सेना मुंबई की को ऑर्डिनेटर राजूल संजय पाटिल ने स्कूल मैनेजमेंट, टीचर्स और स्टूडेंट्स को इस शानदार कार्यक्रम के आयोजन पर मुबारकबाद दी और कहा की विक्रोली इलाके में माइनोरिटी के लिए बनाए गए इस स्कूल से बच्चे

अच्छी शिक्षा हासिल कर के भविष्य में अपने इलाके, शहर, राज्य और देश का नाम रोशन करेंगे।

अल रेहमान इंग्लिश हाई स्कूल के फाउंडर और चेयरमैन अब्दुल रेहमान अंसारी ने कहा की हमारा ख्वाब था की हम एक ऐसा स्कूल बनाए जहां बच्चों को अच्छी तालीम दी जा सके और उन में आत्मविश्वास पैदा किया जा सके. हर साल की तरह इस साल भी स्कूल के एनुअल डे का आयोजन श्री सिद्धिविनायक स्कूल में किया गया जिसमे अलग अलग स्टैंडर्ड के बच्चों ने खूबसूरत पर्फोर्मंस दिया और दसवीं में टॉप करने वाले बच्चों को अवार्ड्स से नवाजा गया. खास बात यह है की स्कूल के अच्छे पर्फोर्मंस के लिए टीचर्स और अन्य स्टाफ ने खूब मेहनत की जिसकी वजह से आज इस प्रोग्राम का शानदार तरीके से आयोजन हो स्का।

मेसर्स ट्राइडेंट एग्रोकॉम एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड और मेसर्स मान इन्फ्राकंस्ट्रक्शन लिमिटेड को पुरस्कार पत्र के जरिये की औपचारिक अधिसूचना जारी

मुंबई(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला पत्तन जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण ने 30 दिसंबर, 2024 को जनेप प्राधिकरण में निर्यात-आयात सह कृषि वस्तु आधारित प्रसंस्करण और भंडारण सुविधा के विकास के लिए मेसर्स ट्राइडेंट एग्रोकॉम एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड और मेसर्स मान इंफ्राकंस्ट्रक्शन लिमिटेड (कंसोर्टियम) को लेटर पुरस्कार पत्र (एलओए) जारी किया है। इस परियोजना का मूल्य लगभग 284 करोड़ रुपये है और बंदरगाह परिसर के भीतर 27 एकड़ भूमि पर इसका निर्माण किया जायेगा। जनेप प्राधिकरण के अध्यक्ष उन्मेष शरद वाघ, भा.रा.से., ने कहा, ह्लयह परियोजना भारत की कृषि रसद क्षमताओं को बढ़ायेगी और घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय कृषि व्यापार दोनों के विकास को सहायता करेगी। नई सुविधा के साथ, जनेप प्राधिकरण भारत के कृषि निर्यात बुनियादी ढांचे को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। नये साल में हमारा ध्यान वृद्धि और विकास में तेजी लाने, प्रमुख परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए तेजी से काम सुनिश्चित करने पर होगा।ह्व एक बार प्रचलित होने पर, इस सुविधा से सालाना लगभग 1.2 मिलियन टन कार्गो का प्रहास्तन अपेक्षित है, जो कृषि वस्तुओं के लिए प्रसंस्करण, भंडारण और परिवहन बुनियादी ढांचे में सुधार कर देश के कृषि व्यापार में महत्वपूर्ण योगदान देगा। यह जवाहरलाल नेहरू पत्तन द्वारा प्रदान की जाने वाली भारत की अपनी तरह की पहली सुविधा है। इसे खाद्य सुरक्षा और व्यापार नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता पर जोर देते हुए प्रसंस्करण, छंटाई, पैकिंग और प्रयोगशाला सुविधाओं सहित व्यापक सेवाएं प्रदान करने के लिए बनाया गया है और यह न केवल महाराष्ट्र बल्कि मध्य प्रदेश और गुजरात जैसे अन्य राज्यों की कृषि उत्पाद की भी आवश्यकताएं पूरी करेगा। इस परियोजना को 16 जुलाई, 2024 को माननीय केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री सबानंद सोनोवाल द्वारा मंजूरी मिली। जनेप प्राधिकरण के बारे में बतादें कि जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्राधिकरण (जनेप प्राधिकरण) भारत के प्रमुख कंटेनर-हैंडलिंग बंदरगाहों में से एक है। 26 मई 1989 को अपनी स्थापना के बाद से जनेप प्राधिकरण ने एक बल्क कार्गो टर्मिनल से देश के प्रमुख कंटेनर पत्तन में परिवर्तन किया है। वर्तमान में जनेप प्राधिकरण पांच कंटेनर टर्मिनलों - एनएसएफटी, एनएसआईसीटी, एनएसआईजीटी, बीएमसीटी और एपीएमटी का संचालन करता है। बंदरगाह में सामान्य कार्गो के लिए उथले पानी की बर्थ भी है। जेएनपीए पोर्ट पर मौजूद लिक्विड कार्गो टर्मिनल का प्रबंधन बीपीसीएल-आईओसीएल कंसोर्टियम द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त, नवनिर्मित तटीय बर्थ अन्य भारतीय बंदरगाहों को जोड़ता है और तटीय कंटेनरों के यातायात को बढ़ाने की सुविधा प्रदान करता है। 277 हेक्टेयर भूमि पर बसा जनेप प्राधिकरण भारत में नियातोन्मुखी उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे के साथ एक सावधानीपूर्वक डिजाइन किया गया बहु-उत्पाद एसईजेड भी संचालित करता है। जनेप प्राधिकरण महाराष्ट्र के वाढवण में एक सभी मौसमों में सक्षम, गहरे ड्राफ्ट वाला, ग्रीनफील्ड पत्तन भी विकसित कर रहा है। यह वैश्विक स्तर पर शीर्ष 10 बंदरगाहों में शामिल होने की संभावना है और इसकी स्थापना से ही 100% ग्रीन पोर्ट होगा। उक्त आशय की जानकारी जनेप प्राधिकरण की वरिष्ठ प्रबंधक (मार्केटिंग) अंबिका सिंह द्वारा मीडियाकर्मियों को साझा की गई है।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय :
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामीः शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, विश्व समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालयः मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

ट्रक की चपेट में आने से मोटर साइकिल सवार भाई, बहन व भांजी की मौत

रियाजुल हक क्राईम रिपोर्टर

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। लाइन बाजार थाना क्षेत्र के अकबर आदमपुर रेलवे क्रॉसिंग के पास बाइक सवार तीन की मौत आज बृहस्पतिवार की दोपहर करीब एक बजे बाइक पर सवार मीरपुर लाइन बाजार से अपने मौसी के घर अरुण 32 वर्ष पुत्र श्याम आरती 18 वर्ष पुत्री श्याम बबीता 12 वर्ष पुत्री राजेंद्र गुरुवार की दोपहर अपने मौसी के घर से बाइक से तीन लोग निकले थे जैसे ही वे अकबरपुर आदमपुर रेलवे क्रॉसिंग के पास पहुचे एक अनियंत्रित ट्रक की चपेट में आ गए जिससे उन तीनों की मौके पर मौत हो गई पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया

है।परिवार के लोगों का रो रो कर बुरा हाल है। पुलिस ने बताया कि ट्रक और उसके चालक को हिरासत में ले लिया गया है।

ठंड से कांप रहे लोग, अलाव की व्यवस्था नहीं

आफताब आलम

मानी कलां जौनपुर (उत्तरशक्ति)। शहर के अलावा ठंड में ग्रामीण क्षेत्रों का हाल बुरा है। शहर में कहीं जन सहयोग व कहीं नगर निकायों द्वारा मजबूरन अलाव की व्यवस्था करा दी गई है, लेकिन ग्रामीण इलाकों के चौक चौराहों पर अलाव की कोई व्यवस्था नहीं है। लोगों को ठंड में ठिठुरना मजबूरी है। कड़ाके की ठंड से क्षेत्र के लोग ठिठुर रहे है। लेकिन ग्राम पंचायत की ओर से अलाव के इंतजाम तो नाकाफी साबित हो रहे हैं। गलन के साथ चल रही बर्फीली हवाएं करंट की तरह लग रहीं हैं।

तीन दिन आसमान में बादल छाए रहने के कारण बुधवार को दिन भी धूप दिखी तो लोगों को ठंड से राहत मिली लेकिन साम होते होते ठंड ने करवट लेली। इस कारण जहां गालियों से लेकर प्रमुख स्थानों पर लोग ठिठुरते रहे वहीं लोगों की दिनचर्या भी अस्त व्यस्त रही। बृहस्पतिवार को जहां अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस रहा तो वहीं न्यूनतम तापमान 8 डिग्री सेल्सियस रहा। पिछले पांच दिन से दिन-भर कोहरा छाया रह रहा। सरकारी कार्यालयों में भी इसका असर दिखा। अधिकतर कर्मचारी कार्यालयों में हीटर सेकते रहे, लेकिन गलियों से

ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं जल रहे अलाव

जब इस सम्बन्ध में ग्राम विकास अधिकारी सोधी शाहगंज से दूरभाष पर पूछा तो उनका कहना था कि अलाव जल रहा है। सवाल अब या उठता है कि अब कौन सच्चा है और कौन झूठा।

लेकर चौराहों तक कहीं भी नजर दौड़ाइए तो अलाव की आंच धरातल पर नहीं दिख रही है। बाजारों में रोजमर्रा कमाने-खाने वाले रिक्शा चालक टायर, रद्दी, पुराने कपड़ों व बोरों को जलाकर ठंड से बचाव कर रहे हैं। कस्बा मानी कलां में हर जगह लोग ठंड से ठिठुरते नजर आ रहे हैं। अस्पताल समेत भीड़भाड़ वाले स्थानों पर भी अलाव की व्यवस्था नहीं है। लोग रद्दी व टायर जला कर शरीर को गरम करने की कोशिश की और प्रशासन को जम कर कोसा। अलाव की व्यवस्था न होने से लोग परेशान विकास खंड सोंधी अंतर्गत कई ग्राम सभाओं में अलाव की व्यवस्था न होने से राहगीर सहित स्थानीय लोग परेशान हैं। कुछ दिनों से ठंड का प्रकोप बढ़ जाने के बाद भी क्षेत्र में अलाव की व्यवस्था न होने से लोग ठंड से ठिठुरने को मजबूर हैं। मानीकलां मेन चौराहा एजेंसी चौराहा,सदर बाजार, बरंगी, सोंगर, मानी खुर्द, भुडकुडहा सहित अन्य स्थानों पर स्थानीय ग्राम पंचायतों द्वारा अलाव की कोई व्यवस्था नहीं है। अमजद खान, मोहम्मद खालिद, दीपक प्रजापति, मोनू प्रजापति बिस्मिल्लाह, राजन मोदनवाल, अब्दुल कादिर, शादाब, तंजीम, राहुल मोदनवाल, अफसर खान,रविन्द्र मोदनवाल, सुनील बिंद, अनिका प्रसाद राजीव कुमार बौद्ध, ज्ञान कुमार, अब्दुल माजिद, संदीप जयसवाल, राजू जयसवाल विरेन्द्र कुमार सहित अन्य लोगों ने अलाव जलवाने की मांग की।

समाज सुधारक संत रामसुभीख प्रजापति की मनाई गई जयंती

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। नगर के अहियापुर में चक्रदूत प्रजापति समाज द्वारा भारतीय प्रजापति शीर्षक सुधारक संत रामसुभीख प्रजापति की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में मुंबई के वरिष्ठ समाजसेवी रामसूरत प्रजापति को मुख्य अतिथि, सिविल कोर्ट जौनपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रजापति आदित्य प्रकाश एडवोकेट, प्रजापति महासभा जौनपुर के उपाध्यक्ष डॉ. योगेंद्र प्रजापति एडवोकेट, अध्यापक महेंद्र प्रजापति, भारतीय समता समाज पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष लौटन प्रजापति को विशिष्ट अतिथि बनाया गया। मुख्य अतिथि रामसूरत प्रजापति ने संत रामसुभीख प्रजापति के जीवन पर प्रकाश डालते हुए एकता पर बल दिया। इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि आदित्य प्रकाश एडवोकेट ने शिक्षा पर बल देते हुए कहा कि कि संत रामसुभीख प्रजापति का सपना तभी पूरा होगा जब हमारा समाज शिक्षित होगा। डॉ.योगेंद्र प्रजापति ने एकता पर बल देते हुए कहा कि जब तक हम लोग एक होकर कोई काम नहीं करेंगे तब तक हम लोगों को कोई सफलता नहीं मिलेगी। इसी क्रम में संस्था के विधिक सलाहकार एवं कलेक्ट्रेट अधिवक्ता समिति जौनपुर के निवर्तमान कोषाध्यक्ष

सुधाकर प्रजापति ने कहा कि संत रामसुभीख प्रजापति ने अपने जीवन काल में मुंबई में रहते थे और प्रजापति की आवाज हुआ करते थे। कुम्हार जाति के उन लोगों का घोर विरोध किया करते थे जो अपने नाम के आगे अन्य जाति का शीर्षक प्रयोग करते थे। चक्रदूत प्रजापति समाज के नगर अध्यक्ष डॉ. आरके चित्रवंशी ने संत रामसुभीख प्रजापति के जीवन पर गीत गाकर लोगों को भावविभोर कर दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व जिला शासकीय अधिवक्ता एवं संस्था के संरक्षक गुलाब चंद्र प्रजापति और संचालन संस्था के उपाध्यक्ष भागीदारी पार्टी (पी) के जिलाध्यक्ष ब्रह्मदेव प्रजापति ने किया। कार्यक्रम के आयोजक संरक्षक चंद्रशेखर प्रजापति ने आये हुए अतिथियों का आभार जताया। इस अवसर पर संरक्षक अध्यापक सरजूराम प्रजापति, संरक्षक मुन्ना लाल प्रजापति, उपाध्यक्ष मोहन लाल प्रजापति, महासचिव अजय कुमार प्रजापति एडवोकेट, मीडिया प्रभारी आनंद प्रजापति, भागीदारी पार्टी (पी) के कोषाध्यक्ष सावन प्रजापति, अनिल प्रजापति, महेंद्र प्रजापति, संजय प्रजापति, संतोष प्रजापति, दीपक प्रजापति, आदर्श प्रजापति आदि उपस्थित रहे।

पत्नी संग वॉक पर निकले भाजपा विधायक पर फायरिंग, बाल-बाल बचे

डॉ.आबिद खान

लखनऊ,लखीमपुर (उत्तरशक्ति)। जनपद के लखीमपुर खीरी में भाजपा विधायक सौरभ सिंह 'सोनू' पर फायरिंग हुई है। हालांकि, वह बाल-बाल बच गए। उन्हें एक भी गोली नहीं लगी है। घटना उस वक्त हुई, जब विधायक पत्नी के साथ वॉक पर निकले थे। वारदात बाद आरोपी फायरिंग करते हुए फरार हो गए। घटना विधायक के घर से 100 मीटर दूर हुई है। शराब पीने से मना किया तो भड़के युवक विधायक सौरभ सिंह का घर सदर कोतवाली के शिव कॉलोनी में है। वह अपने पिता पूर्व राज्य सभा सांसद जुगल किशोर के साथ रहते हैं। पुलिस के मुताबिक, बुधवार रात सौरभ पत्नी के साथ खाना खाने के बाद वॉक पर निकले थे। उन्होंने देखा कि उनके घर से 100 मीटर की दूरी पर दो युवक शराब पी रहे थे।

लखीमपुर में घर से 100 मीटर दूर वारदात!

विधायक ने युवकों को ऐसा करने से मना किया। इस पर दोनों युवक भड़क गए। विधायक से नोकझोंक के बाद फायरिंग की आरोपी भाजपा विधायक से झगड़ने लगे। इसी बीच युवक ने बंदूक निकाली और फायरिंग कर दी। गोली विधायक के बगल से गुजर गई। विधायक पत्नी के साथ भागकर जान बचाई। पुलिस को सूचना दी गई। थोड़ी देर में पुलिस पहुंच गई। आसपास के सीसी टीवी खंगालने में जुटी है। फिलहाल, आरोपियों की अब तक पहचान नहीं हो पाई है।

पुलिस कमिश्नरेट वाराणसी द्वारा पदोन्नत हुए 33 कम्प्यूटर आपरेटर को स्टार लगाकर किया गया सम्मानित

◆ सहायक उपनिरीक्षक बनने पर सीपी ने लगाया स्टार

वाराणसी (उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश पुलिस तकनीकी सेवाएं लखनऊ के अंतर्गत विभागीय

परीक्षा में सफल कंप्यूटर आपरेटर ग्रेड ए मुख्य आरक्षी से आपरेटर ग्रेड बी यानी सहायक उपनिरीक्षक-एम के पद पर पदोन्नति पाने वाले पुलिसकर्मी बृहस्पतिवार को सम्मानित किए गया।पुलिस कमिश्नर मोहित अग्रवाल ने उनके कंधे पर स्टार लगाकर प्रोन्नति की शुभकामना दी। ईसान प्रजापति शिव पवन प्रजापति जय प्रकाश श्याम नारायन वर्मा वीर बहादुर सिंहसरदार वर्मा सुमित सिन्हा रतन प्रसाद सिन्हा, श्याम लाल गुप्ता, सौरभ सिंह, देव कुमार गुप्ता, जिलेदार सिंह, मनोरंजन कुमार, अर्जुन सिंह, विपिन कुमार, हंशनाथ यादव, मनीष वर्मा, अनिरूद्ध वर्मा, राहुल सिंह, बृजेश कुमार सिंह, प्रतिभा पासवान, मिठाई लाल डीसीआरबी, मोहनजी जयसवाल, ओम प्रकाश जायसवाल, रामपाल साहु, मूलचन्द्र साहु, अभिनेष रॉय, जय नारायन राय थाना रोहनिया, अलोक कुमार राम, दिनेश ठाकुर, इस्तियाक, असलम, मो० असलम सुरेन्द्र कुमार यादव,चन्द्रभान यादव जय प्रकाश कुमार ,तेजूलाल महतो अभिनव, प्रदीप कुमार श्रीवास्तव श्रीवास्तव, रविकान्त, दयाशंकर द्विवेदी, रिशु कुमार, शिवजी थाना बड़ागांव, कुमार गौरव, अमोद कुमार मधुकर, सम्बद्ध टीएसएचक्यू सुनील कुमार, सदाशिव, संदीप कुमार, रामदेव वर्मा, अवनिन्द्र पाण्डेय, सुरेन्द्र नाथ पाण्डेय, सतपाल यादव, बृजमोहन यादव, विजयंत कुमार सिंह, गोरखनाथ सिंह, नमिता विसेन, देवेन्द्र नाथ सिंह, राजेश चौधरी, रामनगिना चौधरी, अनिल कुमार, राम कैलाश पटेल, अंशुमान सिंह, शिवचरन सिंह पटेल वहीं, स्टार लगाने के दौरान सीपी ने सभी पुलिस कर्मियों को बधाई दी साथ ही पुलिस अधिकारी मौजूद रहे।

तमंचा व कारतूस के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार

धर्मेंद्र कुमार शर्मा, बदलापुर,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। कोतवाली क्षेत्र के मिरशादपुर नहर पुलिया के पास से देसी तमंचा व कारतूस के साथ एक अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। प्रभारी निरीक्षक बदलापुर गजानंद चौबे ने गुरुवार को बताया कि मुखबिर की सूचना पर एक अभियुक्त अजीत यादव पुत्र परमहंस यादव निवासी ग्राम मोलनापुर थाना बदलापुर को देसी तमंचा 315 बोर व एक जिंदा कारतूस के साथ मिरशादपुर नहर पुलिया के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध पुलिस अग्रिम विधिक कार्रवाई कर रही है।

किशोरी को बहला फुसलाकर भगा ले जाने के आरोप में अभियुक्त गिरफ्तार

सिंगरामऊ,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। थाना क्षेत्र के सरदार नगर नहर पुलिया के पास से किशोरी को बहला फुसलाकर भगा ले जाने के आरोप में वांछित चल रहे एक अभियुक्त को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। थाना अध्यक्ष युजवेंद्र सिंह ने गुरुवार को बताया कि किशोरी को बहला फुसलाकर भगा ले जाने का आरोप में वांछित चल रहे एक अभियुक्त सचिन कुमार पुत्र गुरु प्रसाद निवासी अर्जुनपुर थाना सिंगरामऊ को सरदार नगर नहर पुलिया के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध पुलिस अग्रिम विधिक कार्रवाई की जा रही है।

कई बार चालान पर ड्राइविंग लाइसेंस होगा निरस्त

राज्य सड़क सुरक्षा परिषद की बैठक में सीएम योगी आदित्यनाथ के सख्त निर्देश

लखनऊ(उत्तरशक्ति)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अफसरों को निर्देश दिया है कि किसी वाहन का बार-बार चालान होता है तो संबंधित व्यक्ति का ड्राइविंग लाइसेंस और परमिट निरस्त कर दिया जाएगा। इस कार्रवाई को फास्टैग से जोड़ा जाए। हादसे रोकने के लिए स्कूलों-कालेजों में छह से

10 जनवरी तक सड़क सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाएं। ध्वनि प्रदूषण पर रोक लगाने के लिए मोटरसाइकिलों से ऊंची आवाज करने वाले मोडिफाई साइलेंसर और हॉर्न हटां। नाबालिगों के ई-रिक्शा चलाने पर रोक लगाई जाए। मुख्यमंत्री ने यह निर्देश बुधवार को उत्तर प्रदेश राज्य सड़क सुरक्षा परिषद की बैठक में दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में हर साल 23 से 25 हजार मौतें सड़क हादसे में होती है। इससे राष्ट्रीय क्षति होती है। उन्होंने सभी जिलों में पांच जनवरी तक जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक पूरी कर लेने के निर्देश दिए। सड़क सुरक्षा माह सभी 75 जिलों में पूरा करा लिया जाए। हर माह जिलों में सड़क सुरक्षा की बैठक भी हो। सीएम ने निर्देश दिए कि जिलों में वो जगहें चिन्हित करें, जहां हादसे ज्यादा होते हैं।

विद्युत विभाग द्वारा चेकिंग के दौरान एक लाख की हुई वसूली पांच लोगों पर मुकदमा हुआ दर्ज

सुजानगंज, जौनपुर(उत्तरशक्ति)। क्षेत्र मे गुरुवार के दिन विद्युत विभाग द्वारा हरीपुर,सुल्तानपुर, रामपुर भंभरा गांव में चेकिंग अभियान चलाया गया जहां सत्रह बड़े बकायेदार का कनेक्शन काटा गया तथा पांच लोगों पर ऐफ आई आर करवाया गया।उक्त बातों की जानकारी देते हुए जे ई अवधेश यादव ने बताया कई ग्राम सभा के उपभोक्ताओं ने बकाया बिल लगभग ऐक लाख रुपए जमा कराए वहीं कुछ लोगों का कनेक्शन काटा गया तथा कुछ लोगों के ऊपर कार्य वाही करते हुए मुकदमा पंजीकृत कराया गया। जहां पर हुबनाथ सिंह, प्रमोद कुमार, विनय सिंह, भगत, लेखराज, अनुपम के साथ अन्य विद्युत कर्मचारी उपस्थित रहे।

नए साल में मालवीय पुल के रास्ते दर्शनार्थियों का हुजुम

बाबा के दर्शन करने के लिए निकला लेकिन घंटों

डॉ.एस.के.मिश्र

वाराणसी(उत्तरशक्ति)। जनपद के आदमपुर थानान्तर्गत बुधवार की दोपहर में भदंऊ रेलवे डाट पुल के समीप जाम लगने के कारण गाड़ीयो की लम्बी कतार डाट पुल के दोनों तरफ लग गया। जिससे घंटो? फंसे रहे राहगीर ।जाम के झाम में दर्शनाथी फंसे ।दूर दूर से नये साल में काशी विश्वनाथ धाम में बाबा के दर्शन करने के लिए घर से निकले भक्त जाम में फंसने के कारण घंटो बाद मंदिर में पहुंचे। जाम में फंसने के कारण कईयो का बस और ट्रेन छूटी। यातायात के पुलिस कर्मी दोनों हाथों को पिछे बांध कर आराम के मुद्रा में खड़ा है।या तो जब भी इन सिपाही को आप देखते होंगे अपने हाथों में मोबाइल फोन लेकर रोड पर चल रहे वाहन का फोटो खिचन के बाद अपनी जेब भरने में लग जाते है इन

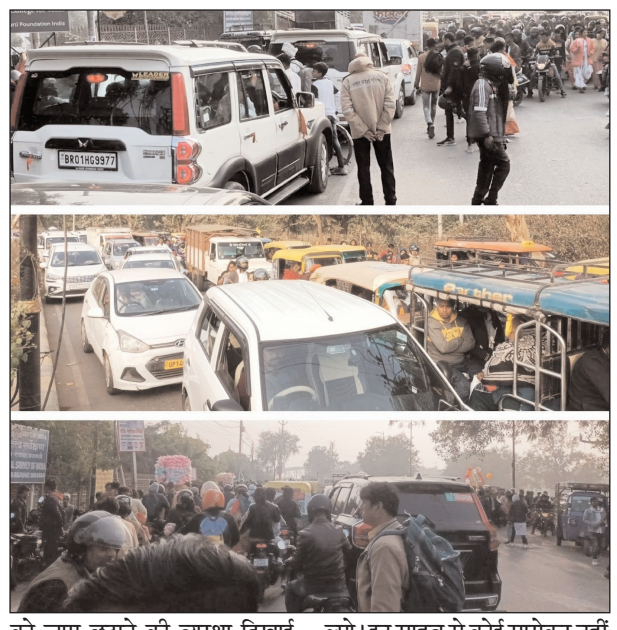

को जाम छुटाने की व्यस्था दिखाई नहीं देता ।रोड पर जाम लगता है तो लगे।इन साहब से कोई सारोकर नहीं ये वसूली करने में मस्त रहते है।

शाहगंज में दिनदहाड़े घरों में घुसकर दबंगों ने किया महिलाओं से मारपीट व अभद्र व्यवहार

ट्वीट कर उच्च अधिकारियों से महिलाओं ने लगाई इज्जत और आबरू बचाने की गुहार

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिले में आए दिन जमीनी विवाद में कानून व्यवस्था तार तार होती नजर आ रहा है ।जिले के विभिन्न स्थानों में दबंग लोगों का रौद्र रूप देखने को मिल जाता है ।जिसका विभिन्न वीडियो समय-समय पर वायरल होता रहता है ।दबंग लोगों को पुलिस के इकबाल का जरा भी डर शायद ही अब बचा हो । ऐसा ही एक मामला थाना शाहगंज क्षेत्र के नई आबादी के मोहल्ला निवासी हुमैरा खातून ने शाहगंज कोतवाली में तहरीर देकर आरोप लगाया है कि जमीन विवाद को लेकर मंगलवार की दोपहर करीब 2:00 बजे एक दर्जन से ज्यादा लोगों ने घर में घुसकर मारपीट एवं लूटपाट की ,व घर में लगा हुआ सीसीटीवी कैमरा तोड़ दिया और उसका डीवीआर उठा ले गए, तहरीर को संज्ञान में लेकर पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है ।नगर के नई आबादी स्टेट बैंक कॉलोनी स्थित एक जमीन को लेकर दो पक्षों के बीच काफी समय से विवाद चल रहा है आप है कि इसी विवाद में मंगलवार की दोपहर सुरीश गांव निवासी एक पक्ष द्वारा अपने दर्जन भर साथियों के साथ घर में घुसकर महिलाओं के साथ मारपीट की और उनसे अभद्रता की है साथ ही मकान व जमीन ना खाली करने पर जान से मारने की भी धमकी भी दिए है ।तहरीर में आरोप लगाया गया है की मारपीट करने पहुंचे लोग महिलाओं के आभूषण और दो लाख रुपए नगदी लेकर भाग गए इस बात की जानकारी सोशल मीडिया के ७ पर पोस्ट करके वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को भी दी गई है। मामले को संज्ञान में आने के बाद पुलिस घटना की जांच में लग गई है ।इस संबंध में प्रभारी निरीक्षक दीपेंद्र सिंह ने बताया कि जमीन विवाद को लेकर मारपीट का मामला संज्ञान में आया है ।जांच के बाद विधिक कार्रवाई की जाएगी।

आंवला की खेती करके समृद्ध बन रहे है प्रगतिशील किसान अलख नारायण सिंह

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। जिला उद्यान अधिकारी ने अवगत कराया है कि उद्यान विभाग द्वारा संचालित एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजनान्तर्गत परंपरागत खेती छोड़कर आंवला की आधुनिक किस्म की खेती कर रहे अलख नारायण सिंह ने कृषि में नई तकनीक अपनाई है। डालूपुर ग्राम के निवासी अलख नारायण सिंह ने एन-7 के 600 पौधे, एन-10 के 100 पौधे आगरा बोर्ड के 300 पौधे, चकला के 250 पौधे तथा लक्ष्मी 52 के 150 पौधे जैसे उन्नत किस्म के आंवला की खेती से अलख नारायण सिंह ने पॉच साल के लिए एक करोड़ दस लाख रू0 में 05 साल के लिए बाग बेच के मुनाफा कमाना शुरू किया है। एन-7 के पौध 2005 में कृषक द्वारा रोपित किया गया जनपद प्रतापगढ़ से पौध लाया गया और स्वयं भी नर्सरी तैयार किया गया। आंवला की खेती करने वाले किसानों को कई तरह के फायदे होते हैं। एकीकृत बागवानी विकास मिशन के अंर्तगत फल क्षेत्र विस्तार कार्यक्रम में आंवला की खेती के अन्तर्गत उद्यान विभाग द्वारा 18000 हे0 अनुदान प्रदान की जाती है तथा इससे किसानों को आंवला की खेती के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होता है ।जिससे किसान लगातार 40 से 50 साल तक आमदनी प्राप्त होता है। आंवला के एक पेड़ से एक साल में लगभग 1 से 2 कुंतल तक आंवले का उत्पादन होता है। इसमें प्राकृतिक विधि का प्रयोग करने पर लागत कम आती है। आंवला के पेड़ बंजर और ऊसर जमीन पर भी आसानी से उग जाते हैं। आवला की खेती के लिए अगस्त-सितंबर में पौधे लगाए जा सकते हैं आंवला की खेती के लिए खेत की सही तैयारी और पौधों की विजाति प्रजातियों का

संतुलित इस्तेमाल करना जरूरी होता है। आंवलें का इस्तेमाल दवाईयां, शैंपू, बालों का तेल, दांतों के पाउडर और मुंह की क्रीम बनाने में भी किया जाता है। आंवला विटामिन सी का सबसे अच्छा स्रोत माना जाता है। आंवला की खेती के लिए राष्ट्रीय बागवानी मिशन योजना के तहत किसानों को सहायता भी उद्यान विभाग द्वारा दी जाती है। जनपद जौनपुर के विकासखंड-महाराजगंज, सुजानगंज में आंवला की खेती ज्यादातर की जाती है। जिलाधिकारी द्वारा प्रत्येक गोष्ठी/मेले में औषधीय पौध आंवला के एक-एक पौध लगाने की अपील भी की गयी हैं। जिलाधिकारी द्वारा अलख नारायण सिंह को किसान दिवस पर सम्मानित भी किया गया है।

गरीब बच्चों को कांस्टेबल ने बांटे गरम कपड़े

खेतासराय,जौनपुर (उत्तरशक्ति)। आमतौर पर पुलिस के वर्दी को लोग अलग-अलग धारणाएं रखते है वही नगर में एक सिपाही की दरियादिली को लोग सराहना करने से नही थक रहे है। गुरुवार की अलसुबह पुलिस पिकेट पर तैनात एक सिपाही ने सर्द हवाओं में खुले आसमान के नीचे टहल रहे असहाय बच्चों को ऊनी वस्त्र, जूता और मोजा उपलब्ध कराए। स्थानीय थाने पर तैनात कांस्टेबल बृकेश यादव कस्बे में तैनाती है। मुख्य चौराहे पर हांड कपा देने वाली ठण्ड में तीन बच्चे फटे और पुराने कपड़े पहन कर यहाँ जली अलाव को सेंकते हुए नजर आये। यह देखकर उक्त सिपाही की करुणा भर आई। उसने बच्चों से जानकारी ली तो उन्होंने बताया कि वह सड़क के किनारे रह रहे खाना बदोश है। उनके पास तन ढकने के लिए ऊनी वस्त्र नही है।

सिपाही वृकेश यादव ने ऊनी वस्त्र, जूता, मोजा और मिठाई खिलाई। सिपाही की इस दरियादिली को लोग सराहना कर रहे है। एसपी सिटी अरविंद कुमार वर्मा ने कांस्टेबल वृकेश की दरियादिली को शाबाशी दी।

◆ सिपाही की इस मदद को लोग कर रहे हैं सराहना

बाला सावंत का जन्म दिवस मनाया गया

वसई रोड। 133 विधानसभा कार्यालय वसई रोड वेस्ट में वसई मंडळ सर चिटणीस बाला सावंत का जन्मदिन धामधूम से मनाया गया। जिसमे वसई विधानसभा अध्यक्ष मनोज पाटील, जितू वेंगुळकर, मनिंदर कोहली, मेथू कोलासो, ?ड,प्रणित, छोटू आनंद, देवानं अहिर, राजदेवसिंग, नरेंद्र सोनी, दुर्लभ पाढीयार, सुरेश हेगडे, लालजी कानोजिया, कल्पेश चौहान, मनोज शर्मा, विजय रजगोर, महाराष्ट्र प्रदेश सचिव अर्पणा पाटील, कांचन सोनी, प्रिया प्रेमळवर, महिला मोर्चा मंडळ अध्यक्ष और बहुत कार्यकर्ता पदाधिकारी ने शुभ कामना लांबी आयु की दिया।

राम दौर यादव का जन्म दिवस मनाया गया

मुंबई। भाजपा झोपडपट्टी मोर्चा के मुंबई अध्यक्ष रामदौर यादव का जन्मदिन कांदिवली में मनाया गया। जिसमे भाजपा उत्तर भारतीय मोर्चा मुंबई महामंत्री रमाकांत गुप्ता, भाजपा झोपडपट्टी मोर्चा मुंबई उपाध्यक्ष शीतल वालिकर सहित बहुत कार्यकर्ता पदाधिकारी ने मुलुंड गोरेगाव लिंक रोड पर शामिल हुए।

सड़क दुघर्टना में युवती की मौत

मुंबई। मुंबई के मुलुंड अमर नगर में आज एक अनियंत्रित टैम्पो ने एक 18 साल लड़की को कुचल दिया। लड़की का नाम शालू रोहित यादव निवासी अमर नगर के बजरंग गली के निवासी बताया गया है। मुलुंड पुलिस टीम ने गाड़ी को अपने कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई शुरू कर दिया है। अमृत का उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ स्थित सारायभादी ग्राम की रहने वाली थी। उसके निधन पर उत्तर यादव युवा संघ के राष्ट्रीय प्रवक्ता कैलाश चंद्रधारी यादव ने शोक व्यक्त किया है।

गोवंश काटने जा रहा हिस्ट्रीशीटर मुठभेड़ में गिरफ्तार

फतेहपुर (उत्तरशक्ति)। सिधांव के जंगल में गोवंश काटने जा रहे हिस्ट्रीशीटर कसाई को पुलिस ने गुरुवार भोर मुठभेड़ में गिरफ्तार किया है। उसका साथी मौके से भाग निकला। आरोपी के खिलाफ गोकशी के कई मुकदमे हैं। आरोपी की सदर कोतवाली पुलिस ने हिस्ट्रीशीट खोल रखी है। ललौली थाने के सिधांव नहर कोठी खंडहर के पास गोकशी की सूचना पर पुलिस ने दबिश दी। पुलिस को देखकर आरोपियों ने फायरिंग की। जवाबी फायरिंग में आरोपी शानू दाहिने पैर में गोली लगने से घायल हो गया। उसका साथी भाग निकला। एएसपी विजयशंकर मिश्र ने बताया कि घायल शानू सदर कोतवाली क्षेत्र के पनी मोहल्ले का है। वह कोतवाली का हिस्ट्रीशीटर है। घायल को सीएचसी बहुआ ले जाया गया। नहर कोठी खंडहर में आरोपी गोवंश को पेड़ पर बांधकर काटने जा रहे थे। आरोपी के पास से एक तमंचा, कारतूस, गोवंश, गौकशी के उपकरणों में कुल्हाड़ी, दो चापड़, तीन चाकू, लकड़ी का ठीहा, तिरपाल, 1200 रुपये बरामद हुए हैं। आरोपी से पूछताछ कर उसके साथी की तलाश की जा रही है। आरोपी शानू के खिलाफ गैंगस्टर, गोकशी समेत कुल छह मुकदमे पहले से हैं।

विद्यालय प्रशासक मुन्ना शुक्ला ने किया थानाध्यक्ष रविशंकर त्रिपाठी से शिष्टाचार मुलाकात

लखनऊ (उत्तरशक्ति)। एस जी पी जीआई थाना के नए थाना अध्यक्ष रवि शंकर त्रिपाठी ने पदभार ग्रहण किया। उन्होंने 1जनवरी अंग्रेजी कैलेंडर के प्रथम दिन थाने में अपने सहयोगियों के लिए स्वादिष्ट भोजन का आयोजन किया। इस अवसर पर वृंदावन चौकी इंचार्ज विकास तिवारी जी भी नए वर्ष के प्रथम दिन शिष्टाचार मुलाकात करने तथा आशीर्वाद लेने पहुंचे इस आयोजन पर मां शारदा महाविद्यालय बाराबंकी के प्रशासक संतोष (मुन्ना शुक्ला)ने कहा कि थाना अध्यक्ष रवि शंकर त्रिपाठी जी एक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और सहयोगी स्वभाव के अधिकारी हैं। पीजीआई थाना में श्री त्रिपाठी के पदभार ग्रहण करते ही चारों तरफ प्रसन्नता और शांति का माहौल हो गया है। भोजन करने के उपरांत सभी कर्मचारियों ने थाना अध्यक्ष रविशंकर त्रिपाठी के सुखी, स्वस्थ और दीर्घायु होने की कामना ईश्वर से की।

भ्रष्टाचार के आरोप में हटाए अयोध्या मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य

लखनऊ (उत्तरशक्ति)। भ्रष्टाचार के आरोप में अयोध्या के राजर्षि दशरथ स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय के प्रधानाचार्य को पद से हटा दिया गया है। उन्हें चिकित्सा शिक्षा महानिदेशालय से संबद्ध किया गया है। साथ ही संविदा पर तैनात लिपिक की मौत के मामले की भी जांच कराई जाएगी। पीड़ित के परिवार ने प्रधानाचार्य पर प्रताड़ना के गंभीर आरोप लगाए हैं। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने अयोध्या मेडिकल कॉलेज में प्रधानाचार्य के प्रकरण को गंभीरता से लिया है। जीरो टालरेंस की नीति अपनाते हुए डिप्टी सीएम ने कार्रवाई की है। डिप्टी सीएम ने बताया कि कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार को पद से हटा दिया गया है। उन्हें चिकित्सा शिक्षा एवं प्रशिक्षण महानिदेशक कार्यालय से सम्बद्ध कर दिया गया है। डॉ. ज्ञानेन्द्र की प्रताड़ना से संविदा लिपिक प्रभुनाथ मिश्र की मृत्यु के आरोपों की भी जांच कराई जायेगी। अयोध्या के प्रधानाचार्य की लगातार गम्भीर शिकायतें हुई। उन पर पूर्व अनुमोदित फर्मों से क्रय की गयी औषधियों, हाउस कीपिंग, बायोमेडिकल वेस्ट, मरीजों का खाने आदि का भुगतान न करते हुए लम्बित बिलों का भुगतान करने में कमीशन की मॉग के आरोप लगे हैं।

श्री गौरी शंकर ग्राम सेवा मंडल का 111वां स्थापना दिवस समारोह संपन्न

डॉ ओमप्रकाश दुबे ने सवा लाख रुपए का किया दान

मुंबई(उत्तरशक्ति)। सबसे पुरानी और प्रतिष्ठित सामाजिक संस्था श्री गौरीशंकर ग्राम सेवा मंडल, मुंबई का १११वां स्थापना दिवस समारोह बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर डॉ शारदा प्रसाद शर्मा, प्रो, बिहारी लाल शर्मा, महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री कृपाशंकर सिंह, मंडल अध्यक्ष रामसेवक पाण्डेय, प्रबंध ट्रस्टी सुभाषचन्द्र उपाध्याय समेत अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।विगत वर्ष की बोहनी कर्त्री मिथिलेश दिनेशचन्द्र उपाध्याय ने मां सरस्वती का पूजन कर इस वर्ष के बोहनी कर्ता डॉ ओम् प्रकाश दुबे को अपना दायित्व सौंपा। उन्होंने सवा लाख रुपए का चेक संस्था अध्यक्ष रामसेवक पांडे तथा डॉ शारदा प्रसाद शर्मा को सौंपा। डॉ राधेश्याम तिवारी , सुधाकर उपाध्याय ,प्रो बिहारी लाल शर्मा, डॉ ओमप्रकाश दूबे ने बहुत ही सार गर्भित शब्दों में भावपूर्ण अभिव्यक्ति की। अध्यक्ष राम सेवक पाण्डेय ने मंडल के संस्थापक पंडित शिवमूर्ति उपाध्याय, पंडित लापता प्रसाद उपाध्याय, ओंकार नाथ दूबे, सभाजीत पाण्डेय, लक्ष्मी नारायण पाण्डेय, जगदीश प्रसाद मिश्र, हरिप्रसाद सिंह, गांव के प्रबंधक बाबू हरिहर सिंह, राम प्रमोद पाण्डेय, श्याम बिहारी मिश्र आदि के योगदान को स्मरण करते हुए उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लिया। प्रबंध ट्रस्टी सुभाषचन्द्र उपाध्याय का संपूर्ण मंडल ट्रस्ट बोर्ड तथा सभागृह में उपस्थित सभी सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत और सम्मान किया। उनके अथक प्रयासों को याद करते हुए दीघार्यु होने की कामना की गई। कार्यक्रम का सुंदर संचालन आनंद सिंह ने किया। संचालन में सुनील पाण्डेय और राकेश उपाध्याय का भी सराहनीय सहयोग रहा। अंत में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ आरआर उपाध्याय ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए मंडल की तरफ से आभार व्यक्त किया।

सपा कार्यकर्ता की धारदार हथियार से निर्मम हत्या

मिजार्पुर(उत्तरशक्ति)। उत्तर प्रदेश के मिजार्पुर जिले में नए साल की खुशियां मातम में उस वक्त बदल गई जब एक एक सपा कार्यकर्ता की अज्ञात लोगों ने धारदार हथियार से हत्या कर दी। बुधवार की रात को हमले के बाद परिजन उपचार के लिए ट्रामा सेंटर लेकर आए। जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने पुरानी रंजिश में हत्या की आशंका जताई है। हालांकि पुलिस ने शव को अभिरक्षा में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मिली जानकारी के मुताबिक घटना मिजार्पुर जिले के कटरा कोतवाली के हरना की गली की है। जहां पर नए वर्ष की रात युवक की धारदार हथियार से हमला कर हत्या कर दी गई। बताया जा रहा है कि देर रात घर लौटते समय दबंगों ने 22 वर्षीय युवा सपा नेता प्रियांशु ओझा पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। घटना के बाद खून से लथपथ प्रियांशु को आनन-फानन अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टर ने भी मौत की पुष्टि कर दी। आशंका जताई जा रही है कि पुरानी रंजिश के चलते धारदार हथियार से हमला कर प्रियांशु की हत्या कर दी। कई वर्षों से विवाद चल रहा था। वहीं मृतक के पिता सुरेश चंद्र ओझा ने कटरा कोतवाली में नामजद तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। पीड़ित के पिता ने सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव से भी न्याय की गुहार लगाई है। फिलहाल पिता की तहरीर पर पुलिस ने हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

वाहन चालकों को गुलाब का फूल देकर सामाजिक संस्थाओं का संदेश शराब पीकर गाड़ी न चलाएं

मुंबई(उत्तरशक्ति)। गत दिनों मे 31 दिसंबर को ट्रैफिक पुलिस की सख्त नाकाबंदी और पुलिस दोपहिया और चारपहिया वाहनों की जांच कर नशे में धुत चालकों के खिलाफ कार्रवाई की गई।वहीं दूसरी तरफ वाहन चालकों के लिए ब्लैकेट्स का आवंटन रोटरी क्लब ऑफ मुंबई और महाराष्ट्र अंधश्रद्धा उन्मूलन संस्थान घाटकोपर की ओर से घाटकोपर शाखा के अध्यक्ष केतन शाह द्वारा ड्राइवरों को शराब पीकर गाड़ी चलाने से रोकने के लिए श्रेयस सिग्नल पर ड्राइवरों को पानी हैंडबिल देकर एक सामाजिक संदेश दिया गया। स्वास्थ्य संबंधी खतरे और नशा से बचनें के लिए गुलाब का फुल दिया गया। इस अभियान में घाटकोपर की ट्रैफिक पुलिस भी शामिल हुई और अभियान में ट्रैफिक पुलिस वाहन चालकों को नशा से बचनें के लिए गुलाब का फुल देकर कहती नजर आई। इस पर पत्रकारों से बात करते हुए, महाराष्ट्र अंधविश्वास उन्मूलन और रोटरी क्लब ऑफ मुंबई के केतन शाह ने कहा कि हमने ड्राइवरों को गुलाब के फूल देकर नए साल की शुभकामनाएं दीं और संदेश दिया कि अगर वे नशे में हैं तो गाड़ी न चलाएं और जोखिम न लें आपका जीवन अनमोल हैं।

अमित शाह,माफी मांगो अभियान

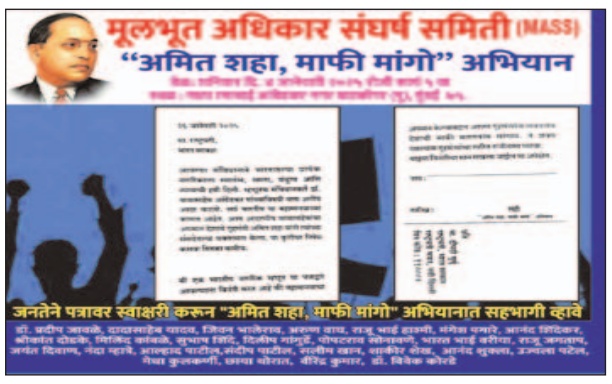

मुंबई। मूलभूत अधिकार संघर्ष समिति द्वारा गृह मंत्री अमित शाह द्वारा संसद में डॉ. बाबा साहब आंबेडकर के प्रति दिये गए आपत्ति जनक व्यक्तव्य के विरोध में अमित शाह, माफी मांगो अभियान प्रारम्भ किया है। इस सन्दर्भ में राष्ट्रपति को लिखे गए पत्र में डॉ. विवेक कोरड़े (संघटक) एवं डॉ. प्रदीप जावले (अध्यक्ष) ने मांग किया है कि इस देश को संविधान के माध्यम से समता, बंधुता, समान अधिकार, समान न्याय का अधिकार प्रदान करने वाले डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के प्रति करोड़ों देश वासियो के मन में श्रद्धा एवं आदर का भाव है। ऐसे विश्व वंदनीय व्यक्ति का संसद में उपहास करने वाले गृह मंत्री अमित शाह देश की जनता से माफी मांगे या राजीनामा दें। ऐसे करोड़ों पत्र राष्ट्रपति महोदया को 26 जनवरी 2025 गणतंत्र दिवस तक भेजें जायेंगे। यह देश व्यापी अभियान मुलभुत अधिकार संघर्ष समिति द्वारा चलाया जा रहा है।

युवा ब्रिगेड द्वारा नव वर्ष का किया गया स्वागत

मुंबई। युवा ब्रिगेड असोसिएशन द्वारा अलविन क्लासेस के सहयोग से नव वर्ष 2025 के स्वागत में गीत संगीत नृत्य का आयोजन केशव पाड़ा, मुलुंड पर किया गया 'इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी डॉ बाबूलाल सिंह, डॉ. सचिन सिंह,डॉ. आर. एम. पाल, मैथ्यु चेरियन, योगेंद्र श्रीवास्तव, श्रीमती जयबाला सिंह, सुनीता श्रीवास्तव, मनोज सिंह प्रमुख अतिथि के रूप मे उपस्थित थे। अलविन क्लासेस की संचालक रीना मोजेस ने सभी का पुष्पगुच्छ देकर सत्कार किया ' इस अवसर पर केशवपाड़ा के 51 बच्चों ने नृत्य गीत संगीत का प्रदर्शन कर नववर्ष 2025 का स्वागत किया। अतिथियों द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु उचित शिक्षा प्रदान कर रहीं श्रीमती रीना मोजेस तथा उनके विद्यार्थियों की सराहना की गयी। तथा नववर्ष के सराहनीय स्वागत के प्रदर्शन हेतु विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं भेंट वस्तु प्रदान किया।

कुम्हार समाज की दो सौ से ज्यादा प्रतिभाओं का सम्मान

झुंझुनूं। कुम्हार कर्मचारी एवं समाज सेवा समिति की ओर से रविवार को किसान कॉलोनी स्थित प्रजापति विकास संस्थान में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।जिसमें मुख्य अतिथि आईएएस पवन प्रजापति,कोटा रेलवे डिवीजन के सीनियर मैनेजर राजकुमार प्रजापत व एसपी शरद चौधरी रहे।

अध्यक्षता डॉ.सहीराम कुमावत ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि आर जे एस सुमित घोडेला, वित्त विभाग के संयुक्त निदेशक रणवीर गुरी, एसडीजी के सहायक निदेशक डॉ.प्रवीण कुमार, एडवोकेट सुरेंद्र लांबा,जिला प्रोटेक्शन ऑफिसर जयप्रकाश कुमावत,सेवा निवृत डीवाईएसपी मोहनलाल दादरवाल,भाजपा के जिला मंत्री महेंद्र चंदवा, रामेश्वर घासोलीया व श्री चंद थे। वक्ताओं ने समाज के युवाओं को स्वावलंबी बनने की दिशा में आगे बढ़ाने,शिक्षित होने,समाज में एकजुटकता बनाकर विकसित होने व सामाजिक बुराइयों का समाप्त करने का आह्वान अपने सम्बोधन में किया। समिति अध्यक्ष हरिराम ददरवाल ने बताया कि समारोह में 90% से अधिक अंक प्राप्त करने वाले, जिमनास्टिक में गोल्ड मेडल जितने वाले,चायानिता व्याख्याताओ,अन्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले करीब 200 से ज्यादा प्रतिभाओं व समाज सेवा में योगदान देने वाले भामाशाहओ का भी इस मौके पर सम्मान किया। रामचंद्र श्रेया, महेंद्र दादरवाल, डॉ. ओमप्रकाश, पंकज किरोड़ीवाल, कुरडा राम नानवाल, राजेंद्र सनोदिया, रामनिवास उज्जीवल, विनोद,वीरेंद दारवाल, डॉ.राजेंद्र कुमावत, अध्यापक संतोष कुमावत, बिरजू राम कुमावत, राजेंद्र घोडेला, नरेंद्र बागोरिया, गोविंद कुंडलवाल, फूलचंद लुहानीवाल, अमोलक पारमुवाल, मूलचंद बिंवाल आदि मौजूद थे।

हादसे में युवक की मौत, एक दिन पहले मनाया था जन्मदिन

वाराणसी। जंसा थाना क्षेत्र के कस्बा स्थित वाराणसी-भदोही मार्ग पर एक नर्सिंग होम के सामने बीती रात अज्ञात वाहन की चपेट में आने से घर के इकलौते बेटे की मौत हो गई। गस्त पर निकले पुलिस के जवानों ने देखा तो युवक को अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। मोटरसाइकिल के नंबर से युवक की पहचान थाना क्षेत्र के बड़ौरा बाजार निवासी आदित्य कुमार शर्मा (22) पुत्र राम सिंगार उर्फ मुन्ना के रूप में हुई। घटना की सूचना पर पहुंचे परिजनों ने बताया कि आदित्य अपने पड़ोसी का पल्सर बाइक लेकर जालपा देवी अपने नाना के घर गया था जहां से देर रात घर लौट रहा था। जानकारी के अनुसार, आदित्य जैसे ही जंसा बाजार स्थित एक नर्सिंग होम के सामने पहुंचा, इसी दौरान किसी अज्ञात वाहन की चपेट में आ जाने से युवक की मौत हो गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक घर का इकलौता चिराग था। बताया गया कि युवक के भाई का पांच वर्ष पूर्व ही मौत हो चुकी थी। केवल एक बहन है। पिता का अपना सैलून है। घटना की सूचना के बाद मां मोनी का रो-रो कर बुरा हाल है। परिवार सहित गांव में मातम छाया हुआ है। ग्रामीणों के अनुसार, उसका पहली जनवरी को जन्मदिन भी था।

होटल में फायरिंग करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

आजमगढ़ (उत्तरशक्ति)। आजमगढ़ शहर कोतवाली पुलिस ने बुधवार को एक होटल में फायरिंग करने वाले चार आरोपियों को पुलिस ने प्राईवेट बस अड्डा से गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपियों के पास से एक लाइसेंसी रिवाल्वर, 19 कारतूस, एक कारतूस, छह मोबाइल फोन और दो हजार रुपये नगद बरामद किया। पुलिस ने बताया कि रामनाथ होटल बंधा रोड बिनायक हास्पिटल के सामने कुछ लोगों द्वारा अपने लाइसेंसी रिवाल्वर से फायर किया जहां पर अफरा-तफरी का माहौल हो गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच में जुट गई।

डीजे बंद कराने पहुंची पुलिस पर युवकों के किया हमला

चित्रकूट (उत्तरशक्ति)। नए साल पर आयोजित समारोह में देर रात तक बज रहा डीजे बंद कराने पहुंचे सिपाही पर डांस कर रहे युवकों ने हमला कर दिया। सूचना पर पुलिस फोर्स पहुंची तो आरोपी इधर -उधर भागने लगे। पुलिस ने कई लोगों को दौड़ाकर पकड़ा।

दो घंटे तक अफरातफरी का माहौल रहा। आखिर में पुलिस ने चार आरोपियों को जेल भेजा है। चित्रकूट नयागांव थाना क्षेत्र के ज्वालादेवी मोहल्ले में महेश्वरी प्रजापति के घर में किराये से रह रहे गोलू के परिजन बुधवार को नए साल की पार्टी मना रहे थे।

वहां रात लगभग 11 बजे तक डीजे बज रहा था। आसपास रहने वाले कई छात्रों ने पुलिस को सूचना दी कि डीजे बजने से परीक्षा की तैयारी में बाधा पहुंच रही है। इस पर यूपी-100 का एक सिपाही वहां पहुंचा और डीजे बंद करने के लिए कहा। सिपाही संतोष ने बताया कि डीजे पर डांस कर रहे कुछ युवकों ने गालीगलौज कर हमला कर दिया।

इससे उसे चोट आई। वहां से हटकर उसने थाने में सूचना दी। सिपाही पर हमले की जानकारी होते ही थाना प्रभारी देवराज शर्मा फोर्स लेकर पहुंचे। यह देखकर वहां अफरा-तफरी मच गई। पुलिसकर्मियों ने वहां मौजूद लोगों को दौड़ाकर पकड़ा। कई युवतियां भी शामिल थीं। थाना प्रभारी ने बताया कि घायल सिपाही को अस्पताल में भर्ती कराया है।

महाकुंभ मे बिना टिकट यात्रियों को रेलवे देगा सुविधा

लखनऊ (उत्तरशक्ति)। महाकुंभ में यात्रियों की सुविधा के लिए रेलकर्मियों के जैकेट पर क्यूआर कोड अंकित होगा। इन्हें स्कैन कर यूटीएस मोबाइल एप डाउनलोड हो जाएगा, जिससे यात्री अनारक्षित श्रेणी के टिकट बना सकेंगे। महाकुंभ में यात्रियों की सुविधा के लिए रेलकर्मियों को ऐसी जैकेट दी जाएंगी, जिन पर क्यूआर कोड छपा होगा। इन्हें स्कैन कर यात्री अनारक्षित श्रेणी के टिकट बनवा सकेंगे। जैकेट के पीछे क्यूआर कोड प्रिंट होगा। इसे स्कैन करते ही यूटीएस मोबाइल एप डाउनलोड हो जाएगा, जिससे यात्री अपने टिकट बना सकेंगे। महाकुंभ के दौरान रेलवे प्रशासन स्पेशल ट्रेनों को चलाएगा, जिन पर थीम प्रिंट होगी। इसके लिए प्रयागराज जाने वाली लखनऊ मंडल की ट्रेनों के कोच पर विनाइल रैपिंग की जा रही है। इसमें महाकुंभ से जुड़े चित्र प्रदर्शित किए जा रहे हैं। रेप्रयागराज जंक्शन पर विशेष ड्यूटी पर कर्मचारी तैनात रहेंगे। कर्मचारी हरे रंग की जैकेट पहने रहेंगे। जैकेटों के पीछे एक क्यूआर कोड प्रिंट होगा, जिसे स्कैन करने पर लिंक मिलेगा, जो सीधे यूटीएस(अनरिजर्व्ड टिकटिंग सिस्टम) ऐप पर ले जाएगा। एप के जरिए यात्री बगैर कतारों में लगे अनारक्षित श्रेणी के टिकट बनवा सकेंगे। इससे समय की बचत होगी। डीआरएम सचिंद्र मोहन शर्मा ने बताया कि जैकेट पर क्यूआर कोड होने से इसे स्कैन करते ही यूटीएस एप पर पहुंच जाएंगे, जहां से अनारक्षित टिकट बुक करने में आसानी होगी। यह सुविधा लखनऊ के स्टेशनों पर भी शुरू करने पर विचार किया जा रहा है। इसके अलावा कलर कोडेड टिकट सिस्टम लागू किया जा रहा है। इससे यात्रियों को उनके टिकट के अनुसार सही दिशा में जाने में मदद मिलेगी। 1680 सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी। प्रयाग जंक्शन पर कलर कोडेड सिस्टम के तहत -प्रयाग जंक्शन पर वाराणसी और जौनपुर की ओर जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए पीले रंग के टिकट होंगे। जो गेट नंबर दो से प्रवेश करेंगे और पीले रंग के आश्रय नंबर दो में जाएंगे। लखनऊ की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए हरे रंग की टिकट रहेगी। इसके यात्री गेट नंबर तीन से प्रवेश करेंगे और हरे रंग के आश्रय नंबर तीन में जाएंगे। अयोध्या की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए नीले रंग की टिकट रहेंगे। यहां के यात्री गेट नंबर तीन से प्रवेश करेंगे और नीले रंग के आश्रय नंबर चार में जाएंगे। फाफामऊ स्टेशन के कलर कोडेड सिस्टम के तहत फाफामऊ पर वाराणसी और जौनपुर की ओर जाने वाले श्रद्धालुओं के लिए पीले रंग के टिकट होंगे। श्रद्धालु गेट नंबर एक से प्रवेश करेंगे और पीले रंग के आश्रय नंबर एक में जाएंगे। लखनऊ की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए हरे रंग की टिकट रहेगी। ये यात्री गेट नंबर एक से प्रवेश करेंगे और हरे रंग के आश्रय नंबर दो में जाएंगे। अयोध्या की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए नीले रंग की टिकट रहेगी।

अपनी जान माल की सुरक्षा के लिए एसपी दरबार पहुंचा किन्नरों का एक गुट

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। किन्नरों का एक समूह गुरूवार को अपनी जान माल की सुरक्षा की गुहार लेकर एसपी के दरबार पहुंचा। किन्नरों ने पुलिस अधिकारी से मिलकर अपनी समस्या बताते कहा कि मेरे क्षेत्र पर कब्जा करने के लिए कुछ किन्नर मुझे जान से मार देना चाहता है कई बार धमकियां भी मिल चुकी है। यदि समय रहते दबंगों के खिलाफ कोई कार्रवाई नही हुआ तो गाजीपुर जैसी वारदात मेरे साथ भी हो सकती है। शाहगंज कोतवाली थाना क्षेत्र के बड़ागांव गांव के निवासी विद्दू किन्नर अपने आधा दर्जन साथियों के साथ आज एसपी आफिस पहुंची। एसपी के मौजूद न रहने पर उन्होने एक अधिकारी को एक प्रार्थना पत्र देकर अपने जान की सुरक्षा की गुहार लगायी। विद्दू ने बताया कि मैं अपने इलाके में नाचने गाने का पेशा करती हूं साथ अतुल वेलफेयर ट्रस्ट से जुड़कर समाजसेवा का कार्य करती हूं। मेरे क्षेत्र की काजल,चांदनी, आरोही दीपा किन्नर जो दबंग किस्म के है वो लोग आये दिन मुझे जान से मारने की धमकी देती है गालौज करती है। पिछले दो दिनों से मेरी निगरानी भी की जा रही है। जिसके कारण मेरे जान को खतरा बना हुआ है।

रंगेहाथ पकड़े गये सिपाही को मोहल्लेवासियों ने जमकर पीटा

केराकत, जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सादी वर्दी में महिला के घर बार-बार आने वाले एक सिपाही की बुधवार रात मोहल्लेवालों ने रंगे हाथ पकड़कर पिटाई कर दी। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है जिससे इलाके में सनसनी फैल गई है। मोहल्लेवासियों के अनुसार सिपाही रोजाना महिला के घर सादी वर्दी में आता था। उसकी संदिग्ध गतिविधियों को देखकर लोगों को शक हुआ। मोहल्लेवासियों की सक्रियता बुधवार की रात जब सिपाही महिला के घर पहुंचा तो मोहल्लेवासी सतर्क हो गए। कुछ समय बाद वे एकजुट होकर घर पहुंचे और दोनों को आपत्तिजनक स्थिति में पकड़ लिया। तत्पश्चात सिपाही को घेरकर उसकी जमकर पिटाई की। इस दौरान किसी ने घटना का वीडियो बना लिया जो अब सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। वहीं घटना की सूचना मिलने पर थाने के कुछ पुलिसकर्मी निजी वाहन में मौके पर पहुंचे। उन्होंने सिपाही को भीड़ से छुड़ाया और उसे अपने साथ ले गये। इस घटना से पूरे इलाके में हड़कंप मचा दिया है। इस बाबत पूछे जाने पर स्थानीय लोगों का कहना है कि सिपाही उसी थाने का बताया जा रहा है। हालांकि पुलिस प्रशासन की ओर से अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है। मोहल्लेवासियों ने इस मामले में निष्पक्ष जांच की मांग की है। साथ ही पुलिसकर्मियों की ऐसी गतिविधियों पर सवाल उठाते हुए कार्रवाई की मांग की है।

छेड़खानी का विरोध करने पर मारपीट कर तीस हजार रुपए लूटने का आरोप

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। गौराबादशाहपुर कस्बा निवासी अमन कुमार गुप्ता ने पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर कस्बे के ही दूसरे समुदाय के लोगों द्वारा शिव मंदिर पर पूजा के लिए जा रही घर की औरतों से छेड़छाड़ का आरोप लगाया तथा विरोध करने पर मारपीट का दुकान में रखे तीस हजार रुपए लूटने का आरोप लगाकर कार्यवाही की मांग की है। आरोप है कि 30 दिसंबर को अमन कुमार गुप्ता के घर की औरतें और बच्चे कस्बे के प्राचीन शिव मंदिर पर पूजा के लिए जा रहे थे। रास्ते में दूसरे समुदाय का युवक अपने घर के पास खड़ा था तथा पूजा के लिए जा रही औरतों से छेड़छाड़ कर दी घर जाकर औरतों के बताने पर अमन कुमार गुप्ता उक्त युवक से पूछताछ करने के लिए गया तो उसके मोहल्ले के लोग जुट कर मामले को जबरदस्ती रफा-दफा कर दिए। इसी रंजिश को लेकर 30 दिसंबर को ही शाम लगभग 5:30 बजे आधा दर्जन लोग अमन कुमार की दुकान पर पहुंच कर उसको गालियां दी तथा मारपीट कर घायल कर दिया। जाते-जाते दुकान में रखे तीस हजार रुपए भी उठा ले गए। अमन कुमार गुप्ता का आरोप है कि गौराबादशाहपुर थाने पर तहरीर देने के बाद भी पुलिस इस मामले में कोई कार्यवाही नहीं कर रही है।

मंडलीय खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी में बिक्री 01 करोड़ के पार पहुंची

-सुरेश गांधी

वाराणसी। उप्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा श्मंडलीय खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी का आयोजन अर्बन हॉट प्रांगण, चौकाघाट में 27 दिसम्बर से 10 जनवरी तक किया जा रहा है। इस मंडलीय खादी ग्रामोद्योग प्रदर्शनी में छठे दिन तक एक करोड़ 03 लाख की बिक्री हुआ। प्रदर्शनी में खादी वस्त्रों व ग्रामोद्योगी वस्तुओं की जमकर खरीदारी हो रही है। उपभोक्ता खादी पर 30 प्रतिशत छूट का लाभ उठा रहे है। परिक्षेत्रीय ग्रामोद्योग अधिकारी यू0पी0 सिंह ने बताया कि प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य प्रदेश दूरस्थ स्थानों के कामगारों द्वारा उत्पादित खादी ग्रामोद्योग सामानों की अधिक से अधिक बिक्री हो, ताकि उनकी आजीविका में सुधार हो सकें और महात्मा गाँधी जी का सपना साकार हो। प्रदर्शनी में कुल 113 स्टाल लगाये गये है, जिसमें 25 स्टाल खादी उद्योग एवं 88 स्टाल ग्रामोद्योगी उत्पाद के लगे है। प्रदर्शनी में खादी के आधुनिक वस्त्र, खादी के बने कटिया, मूंगा और सूती वस्त्र, कुर्ता, पैजामा, शर्ट, गमछा, धोती, रूमाल, लूंगी, रजाई गददे, डिजाईनर साड़ियाँ, बनारसी साड़ियाँ काटन की साड़ियाँ और काश्मीरी शाल, सूट स्टाल, स्वेटर जैकेट एवं उत्तराखण्ड की ऊनी जैकेट एवं सहारनपुर के बने कम्बल, नक्काशीदार सोफा, बेड, दिवान झूला एवं लकडी के बने आधुनिक सामान। प्रतापगढ एवं वाराणसी के ऑवला से निर्मितं खाद्य सामग्री जैसे लडडू, बर्फी, कैंडी, सिरका एवं अचार जैसे आम का अचार नीबू का अचार, लहसून का आचार एवं अदरक आचार, कानपुर के बने चमडे के सामान जैसे जूता, चप्पल, बेल्ट, पर्स एवं आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से बनी दवायें एवं चन्दन, चन्दन फेस पैक एवं रूदाक्ष, अंगूठी और दर्द नाशक तेल प्रदर्शनी में भारी छूट के साथ उपलब्ध है। प्रदर्शनी में आये हुए सभी लोगो से अनुरोध है कि स्वदेशी सामान खरीद कर इस देश को मजबूत बनाइये। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के उद्यमियों को बाजार उपलब्ध कराना एवं विपणन में सहायता व बिक्री के लिये प्रोत्साहित किया जाना है। परिक्षेत्रीय ग्रामोद्योग अधिकारी ने लोगो से मेला में पधारने हेतु अनुरोध किया है।

महिला सुरक्षा गार्ड को नशीला पेय पदार्थ पिलाकर किया रेप

ठाणे। महाराष्ट्र के ठाणे जिले में एक व्यक्ति ने लॉज की महिला सुरक्षा गार्ड को नशीला पदार्थ पिलाकर उससे कथित तौर पर दुष्कर्म किया। पुलिस के एक अधिकारी ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। बदलापुर पूर्व पुलिस थाने के अधिकारी ने बताया कि यह घटना 30 दिसंबर को हुई जब आरोपी अभिषेक सिंह ने पीड़िता को स्थायी नौकरी दिलाने का वादा किया और उसे मिलने के लिए बुलाया। उन्होंने बताया, उसे नशीला पेय पदार्थ दिया गया जिसके बाद वह बेहोश हो गई। जब महिला को होश आया तो उसे एहसास हुआ कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है जिसके बाद उसने पुलिस से संपर्क किया। भारतीय न्याय संहिता के तहत मामला दर्ज किया गया है और आरोपी को पकड़ने के प्रयास जारी हैं।

जिला पंचायत सदन की बैठक संपन्न, की गई बिंदुवार समीक्षा

जौनपुर (उत्तरशक्ति)।कलेक्ट्रेट स्थित प्रेक्षागृह, जौनपुर में जिला पंचायत सदन की बैठक अध्यक्ष श्रीकला धनन्जय सिंह, की अध्यक्षता में आहूत की गयी है। बैठक में मो० हारून, अधिशासी अभियन्ता (सिविल)/अपर मुख्य अधिकारी द्वारा अध्यक्ष,बृजेश कुमार सिंह श्प्रिन्शुश्,विधान परिषद सदस्य,प्रमुखगण,जिला पंचायत सदस्यगण, जिला विकास अधिकारी जौनपुर, परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण जौनपुर, उपायुक्त मनरेगा,जौनपुर का स्वागत करने के पश्चात अध्यक्ष के अनुमति से अपर मुख्य अधिकारी, जिला पचायत द्वारा बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ की गयी। सदन में बिन्दुवार जिला पंचायत के गत बैठक की कार्यवाही की पुष्टि किया गया, जिला पंचायत का पुनरीक्षित वजट वित्तीय वर्ष 2024-25 के मु0 163.10 करोड़ रुपए, जिला पंचायत का मूल वजट वित्तीय वर्ष 2025-26 के मु0 106.38 करोड़ रुपए, वित्तीय वर्ष 2025-26 के 15वाँ वित्त (टाईड ग्रान्ट व अनटाईड ग्रान्ट) एवं पंचम राज्य वित्त आयोग योजना की वार्षिक कार्ययोजना बनाये जाने पर विचार के साथ जनपद जौनपुर का मनरेगा लेबर बजट वित्तीय वर्ष 2024-25 के अनुमोदन किये जाने का प्रस्ताव सदन द्वारा सर्व सम्मति से पास किया गया। बैठक में परियोजना निदेशक, जिला ग्राम्य विकास अभिकरण द्वारा जनपद के गरीब, बेसहारा एवं मध्यम वर्ग के परिवार के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना से लाभान्वति होने की नये नियम / शर्तों के बारे में सदन को अवगत कराया गया। अन्य प्रस्ताव अध्यक्ष की अनुमति से सदस्यगण, जिला पंचायत द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावो पर चर्चा किया गया।जिसमें कतिपय सदस्यगण के क्षेत्र में हाईमास्ट मास्ट लाईट से सम्बन्धित समस्या को लेकर सदन के पटल पर रखा गया।जिसके क्रम में अध्यक्ष द्वारा अभियन्ता एवं अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत, जौनपुर को तत्काल समस्या का निराकरण किये जाने हेतु निर्देशित किया गया। सदस्य बाघ सिंह चौहान द्वारा अवगत कराया गया कि जिला पंचायत द्वारा कतिपय सड़को के निर्माण कार्यों पर ठेकेदार द्वारा साईन बोर्ड नही लगाया गया है तथा बोर्ड पर नाम गलत हो गया है। जिसमें सुधार लाये जाने हेतु अपेक्षा की गयी।बृजेश कुमार सिंह श्प्रिन्सूश्,विधान परिषद सदस्य द्वारा सदन में बैठे सदस्यगण को नव वर्ष 2025 की हार्दिक बधाई देते हुए जिला पंचायत के कार्यों को विकास की गति देने के लिए अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण की सराहना करते हुए अवगत कराया गया। अध्यक्ष महोदया द्वारा राज्य सरकार से जनपद जौनपुर के ग्रामीण क्षेत्रो में जर्जर सड़को को एफ०डी०आर० पद्धति से 154.00 किमी0 मु0 12296.00 करोड़ रू० की लागत से निर्मित किये जाने हेतु प्रस्ताव शासन को भेजा गया है। जिसके स्वीकृति हेतु अध्यक्ष महोदया है। बैठक में अमरेश रतन सिंह, पवन कुमार, लक्ष्मीकान्त यादव, विकास यादव, डा० सुनीता ,द्रौपती यादव, कृष्णा सिंह आदि सदस्य एवं संजय सिंह प्रमुख क्षेत्र पंचायत, सिकरारा,माण्डवी सिंह प्रमुख क्षेत्र पंचायत, महराजगंज, तारा देवी प्रमुख क्षेत्र पंचायत, रामनगर, विमलेश यादव प्रमुख क्षेत्र पंचायत, धमार्पुर, उषा देवी प्रमुख क्षेत्र पंचायत, मुफ्तीगंज, मानी कलाँ कमालुद्दीन क्षेत्र पंचायत तथा अन्य विकास खण्डो के ब्लाक प्रमुखगणो की गरिमामयी उपस्थिति रही।अन्त में अध्यक्ष द्वारा नव वर्ष 2025 की शुभकामानाओं के साथ सदन में उपस्थित विधान परिषद सदस्य, प्रमुखगण, सदस्यगण एवं जनपदस्तरीय अधिकारियों को अंग वस्त्रम व डायरी सप्रेम भेट सहित धन्यवाद ज्ञापित करते हुए बैठक के समाप्ति की घोषणा की गयी।

जौनपुर :देश की सेवा के लिए समर्पित है स्काउट गाइड : विनोद सिंह

डॉ.इम्तियाज अहमद

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। मोहम्मद हसन पीजी कॉलेज के बीएड विभाग में पांच दिवसीय स्काउट गाइड शिविर के चौथे दिन नए वर्ष पर एकता एवं अनुशासन विषय पर सौदागर हाल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया इस की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ अब्दुल कादिर खान ने की कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्वांचल विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक विनोद कुमार सिंह,विशिष्ट अतिथि सिटी मजिस्ट्रेट इंद्र नंदन सिंह,विशिष्ट अतिथि जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉ गोरखनाथ पटेल मौजूद रहे परीक्षा नियंत्रक विनोद कुमार सिंह ने कहा स्काउट गाइड देश के प्रति समर्पित एवं सेवा का भाव जाग्रत करती है सिटी मजिस्ट्रेट ने अपने संबोधन में कहा स्काउट गाइड आपदाओं में बचने में सहायक होती है बीएसए डॉ गोरखनाथ पटेल ने कहा स्काउट गाइड से युवाओं में एक ऊर्जा के साथ अनुशासन एवं एकता का भाव उत्पन्न होता है प्राचार्य डॉ अब्दुल कादिर खान ने कहा स्काउट गाइड की सेवा हमेशा हर असहाय की मदद के लिए समर्पित रहती है चाहे वह किसी भी वैश्विक बीमारियों के बचाव एवं लोगों को जागरूक करने के विषय में हो आए हुए अतिथियों का प्राचार्य ने बुके एवं पुष्प अर्पित करके स्वागत एवं अभिनंदन किया स्मृति चिन्ह एवंम अंग वस्त्रम भी भेंट किया कार्यक्रम का संचालन अहमद अब्बास खान ने किया इस कार्यक्रम में डी.ओ.सी राकेश कुमार मिश्र, प्रधानाचार्य मोहम्मद नासिर खान, डीएलएड प्रभारी आरपी सिंह, डॉ सुनील दत्त मिश्रा, डॉ प्रज्वलित यादव डॉ गुलाब, डॉ संतोष, डॉ आशीष श्रीवास्तव, सुबरीना रशीद, प्रतिमा, तकरीम, अदिति, फरहीन, अजय चौहान, नितेश प्रजापति, बी.एड स्काउट गाइड एवं महाविद्यालय परिवार छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

मथुरा-वृंदावन जानें वाले श्रद्धालुओं के लिए बड़ी खुशखबरी

नईदिल्ली। वृंदावन में बिहारी जी के दर्शन के लिए रोजाना हजारों श्रद्धालु आते हैं। अब इनके लिए एक राहतभरी खबर आई है। भारतीय रेलवे ने श्रद्धालुओं के सफर को आरामदायक बनाने के लिए नई सुविधाएं शुरू करने का फैसला लिया है। इससे सबसे ज्यादा लाभ बुजुर्ग श्रद्धालुओं को होगा। इस दिशा में काम तेजी से चल रहा है और जल्द ही इन सुविधाओं का लाभ मिलना शुरू हो जाएगा। उत्तर मध्य रेलवे का आगरा मंडल मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन पर पांच नई लिफ्टें लगाने जा रहा है। इन लिफ्टों के लगने से श्रद्धालुओं को एक प्लेटफार्म से दूसरे प्लेटफार्म पर जाने में आसानी होगी। खासकर दिव्यांग यात्रियों, बुजुर्गों और महिलाओं के लिए यह सुविधा बेहद मददगार साबित होगी। आगरा मंडल की जनसंपर्क अधिकारी कु. प्रशस्ति श्रीवास्तव ने बताया कि स्टेशन पर लिफ्ट का निर्माण कार्य शुरू हो चुका है। इन लिफ्टों को प्लेटफार्म संख्या 1 व 2 आगरा एंड, प्लेटफार्म संख्या 2/3, प्लेटफार्म संख्या 4/5 और प्लेटफार्म संख्या 5/6 न्यू ब्रिज पर लगाया जा रहा है। इससे केवल खास यात्री नहीं, बल्कि आम लोग भी इसका फायदा उठा सकेंगे। इन लिफ्टों की कुल लागत लगभग 50 लाख रुपये है। वर्तमान में मथुरा जंक्शन पर दो लिफ्ट पहले से चल रही हैं जो प्लेटफार्म संख्या 4/5 और सेकंड एंट्री ओल्ड ब्रिज पर लगी हुई हैं।

अस्थाई गौशाला में मिली काफी दुर्व्यवस्था, केयर टेकर को लगाये फटकार

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने गुरुवार को धमार्पुर ब्लॉक क्षेत्र के 3 गौशाला का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान इमलो पांडेय पट्टी के अस्थाई गौशाला में उन्हें काफी दूर व्यवस्थाएं मिलीं जिस पर उन्होंने केयर टेकर को फटकार लगाई। जानकारी के अनुसार गुरुवार को सुबह मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ओम प्रकाश श्रीवास्तव ब्लॉक क्षेत्र के इमलो पाण्डेय पट्टी के अस्थाई गौशाले पर पशु चिकित्सा अधिकारी धमार्पुर डॉ0 धर्मेंद्र सिंह के साथ निरीक्षण करने पहुंच गये। गौशाला में प्रवेश करते ही उन्हें काफी गंदगी मिली। गोवंशों को ठंड से बचाव के लिए भी उचित व्यवस्था नहीं मिली जिस पर उन्होंने केयर टेकर को जमकर फटकार लगाई। वहीं ग्राम प्रधान दशरथ बिंद को भी गौशाले की देख–रेख व्यवस्था में अपना सहयोग न देने पर कड़ी नाराजगी जताई। उन्होंने एक सप्ताह में व्यवस्था ठीक कर लेने का निर्देश दिया। इस दौरान कुल 95 गोवंश मौजूद मिले। इसके बाद वह कौवापार गांव में बने गौशाले पर पहुचे। यहां उन्होंने एक नया भूसा घर बनावने तथा तिरपाल की व्यवस्था करने के लिए निर्देश दिया। वहीं धमार्पुर के गौशाले मे गोवंशों के लिए के लिए चुनी–चोकर की और मात्रा बढ़ाने के लिए कहा।